

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

* सरल संस्कृत शिक्षक *

तृतीयभाग ।

जिसको

जयपुरनिवासी श्रीसूर्यनारायणशर्मा

आचार्य ने व्याकरण तथा अनुवाद

सीखने में बालकों को सहायता

पहुंचानेके अभिप्रायसे बनाया

और

श्रीमातृ पण्डित श्यामसुन्दरजी साहव एम. ए.

शिक्षाविभागाध्यक्ष रियासत जयपुर ने पसंद

फर्माकर मिडिलस्कूलों में जारीकिया

द्वितीयद्वित्त

१०००

{ मूल्य ६ आने

जेलप्रेस जयपुर.

द्वि० द्वौ
 तृ० द्वाभ्याम्
 च० द्वाभ्याम्
 प० द्वाभ्याम्
 ष० द्वयोः
 स० द्वयोः

द्वौ
 द्वाभ्याम्
 द्वाभ्याम्
 द्वाभ्याम्
 द्वयोः
 द्वयोः

द्वौ
 द्वाभ्याम्
 द्वाभ्याम्
 द्वाभ्याम्
 द्वयोः
 द्वयोः

बहुवचनान्त त्रि शब्द ।

पुँल्लिङ्ग
 व०
 प्र० त्रयः
 द्वि० त्रीन्
 तृ० त्रिभिः
 च० त्रिभ्यः
 प० त्रिभ्यः
 ष० त्रयाणाम्
 स० त्रिषु

नपुंसकलिङ्ग
 व०
 त्रीणि
 त्रीणि
 त्रिभिः
 त्रिभ्यः
 त्रिभ्यः
 त्रयाणाम्
 त्रिषु

स्त्रीलिङ्ग ।
 व०
 तिस्रः
 तिस्रः
 तिसृभिः
 तिसृभ्यः
 तिसृभ्यः
 तिसृणाम्
 तिसृषु

बहुवचनान्त चतुर शब्द ।

पुँल्लिङ्ग

नपुंसकलिङ्ग

स्त्रीलिङ्ग ।

) तीन । (२) बार ।

६०

प्र० चत्वारः
 द्वि० चतुरः
 तृ० चतुर्भिः
 च० चतुर्भ्यः
 पं० चतुर्भ्यः
 ष० चतुर्णाम्
 स० चतुर्षु

६०

चत्वारि
 चत्वारि
 चतुर्भिः
 चतुर्भ्यः
 चतुर्भ्यः
 चतुर्णाम्
 चतुर्षु

६०

चतस्रः
 चतस्रः
 चतसृभिः
 चतसृभ्यः
 चतसृभ्यः
 चतसृणाम्
 चतसृषु

१

बहुवचनान्त पञ्चन् शब्द ।

तीनों लिङ्गों में समान रूप होते हैं ।

७०

प्र० पञ्च
 द्वि० पञ्च
 तृ० पञ्चभिः
 च० पञ्चभ्यः
 पं० पञ्चभ्यः
 ष० पञ्चानाम्
 स० पञ्चसु

नित्यबहुवचनान्त षष् शब्द ।

तीनों लिङ्गों में समान रूप होते हैं ।

ब०

प्र०

षट्

द्वि०

षट्

तृ०

षड्भिः

च०

षड्भ्यः

पं०

षड्भ्यः

ष०

षण्णाम्

स०

षट्सु

नित्यबहुवचनान्त

तीनों लिङ्गों में समान—

सप्तम्	अष्टम्	नवम्	दशम् ।
ब०	ब०	ष०	ष०
प्र० सप्त	अष्टौ	} नव	दश
	अष्ट		
द्वि० सप्त	अष्टौ	} नव	दश
	अष्ट		

द्वितीयशब्द ।

पुंलिङ्ग ।

द्वितीयः	द्वितीयौ	द्वितीयाः
द्वितीयम्	द्वितीयौ	द्वितीयान्
द्वितीयेन	द्वितीयाभ्याम्	द्वितीयैः
द्वितीयस्मै	द्वितीयाभ्याम्	द्वितीयेभ्यः
द्वितीयाय		
द्वितीयस्मात्	द्वितीयाभ्याम्	द्वितीयेभ्यः
द्वितीयात्		
द्वितीयस्य	द्वितीययोः	द्वितीयानाम्
द्वितीयस्मिन्	द्वितीययोः	द्वितीयेषु
द्वितीये		

नपुंसकलिङ्ग ।

द्वितीयम्	द्वितीये	द्वितीयानि
द्वितीयम्	द्वितीये	द्वितीयानि
तृतीयादि विभक्तियों में पुंलिङ्ग के समान रूप होते हैं ।		

स्त्रीलिङ्ग ।

द्वितीया	द्वितीये	द्वितीयाः
द्वितीयाम्	द्वितीये	द्वितीयाः

तृ०	द्वितीयया	}	द्वितीयाभ्याम्	द्वितीयाभ्य
च०	द्वितीयस्यै द्वितीयायै		द्वितीयाभ्याम्	द्वितीयाभ्य
पं०	द्वितायस्याः द्वितीयायाः	}	द्वितीयाभ्याम्	द्वितीयाभ्य
ष०	द्वितीयस्याः द्वितीयायाः		द्वितीययोः	द्वितीयानाम्
स०	द्वितीयस्याम् द्वितीयायाम्	}	द्वितीययोः	द्वितीयासु

तृतीय (तीसरा) शब्द के रूप भी तीनों लिङ्गों में द्वितीय शब्द के समान ही होते हैं। चतुर्थ, पञ्चम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम, एकादश, द्वादश, त्रयोदश, चतुर्दश, पञ्चदश, षोडश, सप्तदश, अष्टादश, और नवदश, इन शब्दों के रूप पुल्लिङ्ग में बालक शब्द के समान और नपुंसकलिङ्ग में पुस्तक शब्द के समान होते हैं स्त्रीलिङ्ग में अन्तिम अकार के स्थान में ईकार होजाता है और इस तरह से बने हुए चतुर्थी, पञ्चमी इत्यादि शब्दों के रूप नदी शब्द के समान होते हैं।

कृत्वा और ल्यप्-प्रत्यय ।

पूर्वकालिक क्रिया अर्थात् 'कहकर, सुनकर, लेकर, देकर,

(१) इन शब्दों के अर्थ क्रम से चौथा, पांचवा इत्यादि हैं।

(२) कृत्वा में 'त्वा' और ल्यप् में से 'य' मात्र रहता है।

सि प्रकार का अर्थ प्रकट करने के लिए धातु के आगे 'त्वा' प्रत्यय जोड़ा करते हैं । परन्तु यदि धातु के पहले कोई उपसर्ग होतो 'य' प्रत्यय जुड़ता है । 'त्वा' अथवा 'य' का धातु से योग होने पर प्रायः इनका रूप बदलजाया करता है इस लिए यहां आवश्यकतानुसार कितनेही धातुओं के 'त्वा' के कितनों ही के 'य' के और कितनों ही के दोनों के रूप लिखते हैं—

गठित्वा—	पढ़कर,	दृशित्वा	} हंसकर
गनित्वा	} गिरकर	उपहस्य	
निपत्य		विहस्य	
भक्षित्वा	} खाकर	पीत्वा	} पीकर
भुक्त्वा		निपीय	
उपभुज्य			
उदित्वा		} कहकर	
उक्त्वा			
घात्वा	} सूंयकर	श्रुत्वा	} सुनकर
अ.घाय		उपश्रुत्य	
दृष्टः—देखकर		स्पृष्ट्वा—छूकर	
गत्वा—जाकर		दत्त्वा—देकर	
मिलित्वा—मिलकर			
नीत्वा	} लेजाकर	आदाय—लेकर	
		लेकर	

आनीय—लाकर

सुप्त्वा—सोकर

कृत्वा—करके

हत्वा { मारकर
निहत्य }

अपकृत्य—बुरा करके

उपकृत्य—भलाकरके

चोरयित्वा—चुराकर

नत्वा { नमस्कार करके
प्रणम्य }जित्वा { जीतकर
विजित्य }

ताडयित्वा—पीटकर

चिन्तयित्वा { सोचकर
विचिन्त्य }

स्थित्वा—ठहरकर

प्रविश्य—घुसकर

उपविश्य—बैठकर

हिन्दी में अनुवाद करो ।

एकः पुरुषः कानने हरिणीं तस्याः शिशुं च ददर्श । द्वौ बालकौ द्वे फले भक्षतः । तिस्रः कन्याः पण्डितायाः समीपे त्रीणि पुस्तकानि पठन्ति । प्रयागे तिस्रणां नदीनां सङ्गमो भवति । चतसृषु स्त्रीषु द्वे पण्डिते स्तः । चतुर्णां पुरुषाणां चतस्र एव भार्याः सन्ति तथा च सर्वे मित्रित्वा अष्टौ जगः शालायां तिष्ठन्ति । पाण्डोः पञ्च पुत्रा आसन् दशरथस्य च चत्वारः । एतस्मिन् वर्गे चतुर्दश बालकाः कौमुदीं पठन्ति द्वादश च सारस्वतम् । अस्माकं विद्यालये त्रयोदश बालकाः साहित्यं, चतुर्दश न्यायम् अष्टादश व्याकरणं नवदश च ज्यौतिषं पठन्ति ॥

संस्कृत में अनुवाद करो ।

पांच और दश पन्द्रह होते हैं । ये तीनजुंठ कहां जायेंगे ? ।
 इस तबेले में चार ही घोड़ियाँ हैं । तीन रूपसे लाओ । उस
 लड़ाई में एक मनुष्य के सात लडके थे । क्या तुम ने कहीं इन
 छहों आदमियों को देखा था । मिनि पैल साहब पांच उस्तादों के
 पठाने के ढंग की तारीफ करते थे । क्या इस किताब में उन्नीस
 पाठ हैं । सात में से चार फल पके हैं ।

हिन्दी में अनुवाद करो ।

पूर्वमेक एव वेद आसीत् । ततः श्रीव्यासः सर्वस्य वेदस्य चतुरो
 विभागान् कृत्वा चतुरो वेदान् चकार । तेषु ऋग्वेदः प्रथमः, य-
 जुर्वेदो द्वितीयः, सामवेदः तृतीयः, अथर्ववेदश्च चतुर्थोऽस्ति ।
 भारतमपि पञ्चमं वेदं वदन्ति । आश्विनस्य शुक्ले पक्षे पष्ठ्यां
 तिथौ बहवो जना आमेरं गच्छन्ति । गाचीनाः पण्डिताः त्रयोदश्यां
 व्याकरणं न्यायं च न पठन्ति । अस्मिन् वर्षे मार्चमासस्य सप्त-
 दश्यां तिथौ प्रवेशिकापरीक्षा अभियुयति ॥

- (१) उष्ण रूप वालक के समान । (२) अश्वा - रूप विद्या के समान ।
 (३) विद्यालयाध्यक्ष - रूप वालक के समान । (४) पाठन - रूप पुस्तक के
 (५) शैला - रूप नदी के समान ॥

संस्कृत में अनुवाद करो ।

दशरथ के पहले पुत्र का नाम राम, दूसरे का लक्ष्मण तीसरे का भरत और चौथे का शत्रुघ्न था । दूसरा भरत और तीसरा

लक्ष्मण था ऐसा भी कितने ही पण्डित कहते हैं । सातवें क्लास के लड़कों को बुलाओ । सात किताबें तो मैरी हैं पर यह आठवीं किस की है ! रघुवंश के तेहरवें सर्ग में लड्डू के और अयोध्या के

बीच के स्थानों का वर्णन है । साहित्यदर्पण के दशवें परिच्छेद

में अलङ्कारों के लक्षण हैं । निचारीशिल पुरुष "लडकेका विवाह सोलहवें वर्ष में होना चाहिए" ऐसा कहते हैं । इतिहास की किताब

के उन्नीसवें पेज में दुश्मनों के हमले की तस्वीर है । महारान विक्टोरिया अठारहवें वर्ष में राजसिंहासन पर बैठी थी । औरंगजेब ने चौदहवें वर्ष में हाथी से युद्ध किया था ।

हिन्दी में अनुवाद करो ।

रामायणं पठित्वा सर्वे जनाः बालमीकेः कवितायाः प्रशंसार्थं कुर्वन्ति । वृष्टेः शुद्धं मधुरं च जलं पृथिव्यां पतित्वा मलिनं भवति ततो नदीभिः समुद्रं गत्वा क्षारं भवति । पश्य ब्राह्मणो मोदकान् ।

(१) कोचित् । (२) मध्य-रूप पुस्तक के समान । (३) रूप पुस्तक के समान । (*) पुं-बालक के समान । (५) नपुं-पुस्तक के समान । (६) पृष्टं-पुस्तक के समान । (७) आक्रमण-रूप पुस्तक के समान ।

भक्षित्वा सांप्रतं सुखेन स्वापिति । स गुरुगामपि संमुखे हसित्वा
 वदति । एषतस्य दोषः । इक्ष्णामपि रसं पीत्वा जलमेव याचसि ? ।
 पुष्पाणांगन्धमाघ्राय भ्रमराः स्वयमेवाऽऽगच्छन्ति । धीवराः सलि-
 लाशयं दृष्ट्वा परस्परमवदन् । राजा अन्तःपुरं गत्वाऽचिन्तयत् । सर्वे
 मिलित्वा व्याघ्रं हतानृपः पौरुषः सर्वा सेनां नीत्वा अलक्ष्येन्द्रेण
 युद्धं चकार ।

संस्कृत में अनुवाद करो ।

लडकों को थोड़ी हिन्दी भाषा पढकर पीछे संस्कृत पढना
 माहिये । सज्जनों का बुग करके कोई कैसे सुख से जीवे ।
 ह लोगों का भला करके सब का प्यारा होगया । गीव
 ढके को पीटकर अब क्यों भागता है ? जरा ठहरकर मेरी बात
 सुने । बावडी में धुमकर अक्षलियों से पानी पीले । यदि तू महा
 भारत सुनकर आया होता तो भीष्म की सारी कथा कह देता ।
 हम-दोनों इस दरख्त को छूकर भगते हैं तू देख कि पहले कौन
 आता है । लुटेरे ने मुसाफिर को भरोसा देकर मारडाला । वह
 एक पहर सोकर आएगा ।

(१) सांठारूप शिशु के समान । (२) याच-मांगना रूप ब्रज धातु के
 समान । (३) धाव-भगना-रूप ब्रज के समान-पारोक्षभूतं (लिट्) 'दधाव,
 दधावतुः, दधावुः' इत्यादि । (४) वापी-रूप नदी के समान । (५) दस्यु-
 रूप गुरु के समान । (६) विश्वास-रूप बालक के समान ।

भीमसेन ने पहले दुःशासन को मारकर पीछे दुर्योधन को

मारा था । कुम्भिलक ने कहा कि मैं अंगूठी को चुराकर नहीं ले-
 गया यह मच्छ के पेट में थी । लडाई में रूसको जीतकर जापान
 संसार में प्रसिद्ध होगया । मैं तीन दिन सोचकर तेरी बात का
 जवाब दूंगा । माँ के पास बैठकर वह जो कहे सो सुन । बहुतसी
 जहाजें पानी में घुसकर चलती हैं । जो रास्ते को देखकर नहीं
 चलता वह अकसर गिरजाता है

तुमुन् प्रत्यय ।

निमित्तक्रिया अर्थात् “जाने को, जाने के लिए” खाने को,
 खाने के लिए” इस प्रकार का अर्थ प्रकट करने के लिए धातु के
 आगे ‘तुम्’ प्रत्यय जोड़ा करते हैं । ‘तुम्’ को धातु से योग होने
 पर प्रायः धातु तथा प्रत्यय का रूप बदलजाया करता है इस लिए
 कितने ही आवश्यक धातुओं के ‘तुम्’ प्रत्यय के रूप लिखेजाते हैं ।

पठितुम्	} पढ़नेको } पढ़ने के लिए	द्रष्टुम्	} देखने को } देखने के लिए

(१) अङ्गुरीयक-रूप पुस्तक के समान । (२) मत्स्य-रूप बालक
 के समान । (३) उदर-रूप पुस्तक के समान । (४) इत् में केवल
 ‘तुम्’ बाकी रहता है ।

श्रोतुम्	{ सुनने को सुनने के लिए	चोरयितुम्	{ चोरने को चोरने के लिए
स्मृतुम्	{ छूने को छूने के लिए	जेतुम्	{ जीतने को जीतने के लिए
दातुम्	{ देनेको देने के लिए	चिन्तयितुम्	{ सोचने को सोचने के लिए
		लिखितुम्	{ लिखने को लिखने के लिए

मम पिता मां गणितं पठितुं वदति । किं सा कोपेन कूपे प-

तितुं गच्छति ? । स सर्वा कर्काटिकां भोक्तुं कथमपि न समर्थः ।

रे मूर्ख ! पाठशालायां पठितुमागच्छसि न हसितुम् । जलं पातु-

मिच्छामि । अद्य रात्रौ वयं नाटकं द्रष्टुं गमिष्यामः । ह्यः पाठ-

शालायामहं विल-वेनाऽगच्छम्, अतः शिक्षको मां शीघ्रमागन्तुम-

क्थयत् । कृष्णमानेतुमक्रूरो मथुराया वृन्दावनं जगाम । यदि स

उपद्रवं न कर्तुं प्रतिज्ञां कुर्यात् तर्हि तं त्यज । देवं नमस्कृतुं

भक्ता जना मन्दिरं गच्छन्ति ॥

साथी को दरवाजे पर ठहरने के लिए कहकर चोर घर में गया। क्या तू सुझे बैठने को कहता है ! उन्होंने हम को घर में घुसने को कहा। कान खुलने को हैं और हाथ छूने को। उस को कीमत देने को और किताब लेने को कह। जब वे सोने को गये थे तब हम ने उन को देखा था। लोगों को मारने के लिए और चीजें चुराने के लिए चोर ही समर्थ है। महाराज मानसिंहने लड्डा को जीतने के लिए चढाई करना विचारा था। इन बालकों को सोचकर लिखने को कहो ॥

२

विंशति, एकविंशति, द्वाविंशति, त्रयोविंशति, चतुर्विंशति, पञ्चविंशति, षड्विंशति, सप्तविंशति अष्टाविंशति नवविंशति—ये सब शब्द सदा एक वचन में ही आने हैं और इन के रूप मति शब्द के समान होते हैं ॥

एक वचनान्ते त्रिंशत् (तीस) शब्द ।

ए. ६.

प्र० त्रिंशत्

द्विः त्रिंशत्

(१) सहचर-रूप बालक के समान । (२) इन शब्दों के अर्थ क्रम से वास, इक्कीस इत्यादि हैं। इन शब्दों के आगे से नि उढानने से वचने हुए विंश, एकविंश इत्यादि शब्दों का अर्थ क्रम से वासवां इक्कीसवां वाईसवां, इत्यादि होजाता है। परन्तु स्त्रालिङ्ग में 'विंशी, इत्यादि नदी शब्द के समान रूपवाले शब्द वनते हैं ॥

तृ०	त्रिंशत्
च०	त्रिंशते
पञ्च०	त्रिंशतः
ष०	त्रिंशतः
सप्त०	त्रिंशति

१

एकत्रिंशत्, द्वात्रिंशत्, त्रयस्त्रिंशत्, चतुस्त्रिंशत्, षड्त्रिंशत्, सप्तत्रिंशत्, अष्टत्रिंशत्, नवत्रिंशत्, चत्वारिंशत्, एकचत्वारिंशत्, द्विचत्वारिंशत्, त्रिचत्वारिंशत्, चतुश्चत्वारिंशत्, पञ्चचत्वारिंशत्, षड्चत्वारिंशत्, सप्तचत्वारिंशत्, अष्टचत्वारिंशत्, नवचत्वारिंशत्, पञ्चाशत्, एकपञ्चाशत्, द्विपञ्चाशत्, त्रिपञ्चाशत्, चतुष्पञ्चाशत्, पञ्चपञ्चाशत्, षट् पञ्चाशत्, सप्तपञ्चाशत्, अष्टपञ्चाशत्, और नवपञ्चाशत्, इन सब शब्दों के रूप त्रिंशत् शब्द के समान होते हैं ।

(१) इन शब्दों के अर्थ क्रम से इकतीस, बत्तीस इत्यादि हैं । इन में से 'त्' उडा देने से बचे हुए त्रिंश, एक त्रिंश इत्यादि शब्दों का अर्थ क्रम से 'तीसवां, इकतीसवां' इत्यादि होजाता है । परन्तु स्त्रीलिङ्ग में 'त्रिंशी' इत्यादि नदीशब्द के समान रूप वाले शब्द बनते हैं ।

एकवचनान्त षष्टि (साठ) शब्द ।

ए० व०	
प्र०	षष्टिः
द्वि०	षष्टिम्
तृ०	षष्ट्या
च०	षष्ट्यै
	षष्ट्ये
पञ्च०	षष्ट्याः
	षष्टेः
षः	षष्ट्याः
	षष्टेः
सप्त०	षष्ट्याम्
	षष्टौ

एकषष्टि, द्विषष्टि, त्रिषष्टि, चतुष्षष्टि, पञ्चषष्टि, षट्षष्टि, सप्तषष्टि, अष्टषष्टि, नवषष्टि, सप्तति, एकसप्तति, द्विसप्तति, त्रिसप्तति, चतुस्सप्तति, पञ्चसप्तति, षट्सप्तति, सप्तसप्तति, अष्टसप्तति, नवसप्तति,

(१) इन शब्दों के अर्थ क्रम से इकसठ, बासठ इत्यादि होते हैं ।

(२) इन शब्दों के आगे 'तम' जोड़ देने से साठवां, इकसठवां, इत्यदि अर्थ होजाता है । परन्तु स्त्रीलिङ्ग में 'तमी' जोड़ा जायगा और इस प्रकार से बने हुए 'षष्टितमी' इत्यादि शब्दों के रूप नदी के समा होते हैं ।

अशीति, एकाशीति, द्व्यशीति, त्र्यशीति, चतुरशीति, पञ्चाशीति, षडशीति, सप्तशीति, अष्टशीति, नवाशीति, नवति, एकनवति, द्विनवति, त्रिनवति, चतुर्नति, पञ्चनवति, षण्णवति, सप्तनवति, अष्टनवति, और नवनवति, इन शब्दों के रूप षष्टिशब्द के समान होते हैं ।

शत, सहस्र, लक्ष इत्यादि शब्दों के रूप पुस्तक शब्द के समान होते हैं । 'सवाँ' इत्यादि अर्थ करने के लिये पुँलिङ्ग, नपुंसक लिङ्ग में 'तम' और स्त्रीलिङ्ग में 'तमी' जोड़ना चाहिए ।

कोटि शब्द के रूप मति शब्द के समान होते हैं । 'करोडवां' इत्यादि अर्थ के लिए पुलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग में 'तम' और स्त्री लिङ्ग में 'तमी' जोड़ना चाहिए ।

हिन्दी में अनुवाद करो

विंशतिः पुरुषाः सौधस्य द्वारे तिष्ठन्ति । रात्रौ तेषु दश जाग्रति दश च स्वपन्ति । किं त्वमस्मात् पुस्तकात् पञ्चविंशतिं पाठान् अपाठीः ? त्रिंशते छात्रेभ्यः पुस्तकानि दास्यामि । एकपञ्चाशतः फलानां मूल्यमेकं रूप्यमस्ति । अशीतिः खगाः पञ्जरे

आसन् त्वं च 'पञ्चसप्ततिः सन्ति' इति वदसि तर्हि पञ्च कुत्र ? किं तान् विडालो जघान ? दश शतानि सहस्रं भवन्ति । शतं सहस्राणि च लक्षम् । भारतवर्षे विंशतिः कोटयो हिन्दवः सन्ति ।

संस्कृत में अनुवाद करो

पच्चीस सवार राजा के घोड़े के आगे जाते हैं और पचास पीछे । जयपुर से देहली सौ कोश परहै । क्या तेरी किताब में वासठ पेज हैं । मेरी में तो साठ ही हैं । इस डाली पर वानवे पत्ते थे उन में से बारह गिरगए अब कह कितने बाकी हैं । क्या कल तुमने मुझे पचपन रुपये दिए थे ? । नहीं मैं ने तो सिर्फ एकावन ही दिए थे । इबाराहीम और बाबर की पाणीपत में जो लडाई हुई थी उस में तीस हजार आदमी थे । महाराज एडवर्ड उनहत्तर

(१) अश्वारोह-रूप, बालक के समान । (२) पुरः-अव्यय । (३) पृष्टतः-अव्यय । (४) कोश-रूप बालक के समान । (५) कति-यह शब्द सदा बहु वचन में ही आता है रूप-प्र० कति द्वि० कति तृ० कतिभिः, चः० कतिभ्यः, प० कतिभ्यः, प० कतीनाम स० कतिषु यति (जितने), तति (उतने) इन शब्दों के रूप भी के समान होते है । (६) अवशिष्ट विशेषण ।

वर्ष जिए थे और नौ वर्ष राज्य किया और इन की माता महा रानी विक्टोरिया इकासी वर्ष जी और चौसठ वर्ष राज्य किया बेटा सौ वर्ष जीवो ।

धातु (क्रिया)

खन् (खोदना)

(लट्)	(लोट्)	(लङ्)	(लिङ्)	(लृट्)
वर्तमान	आज्ञा	अनद्यतनभूत	विधि	अनद्यतनभवि
खनति	खनतु	अखनत्	खनेत्	खनित्वा
(लिङ्)	(लट्)		(लृङ्)	(लृङ्)
आशिष	सामान्यभविष्यत्		सामान्यभूत	क्रियातिपरि
खायात्	} खनिष्यति		अखानीत्	} अखनिष्यत्
खन्यात्			अखनीत्	

परोक्षभूत (लिट्)

ए० व०	द्वि० व०	व० व०
चखान	चखन्तुः	चखन्तुः

(१) खन् धातु से पहले नि, लगा देने से गाड देना अर्थ हो जाता है । जिन लकारों में पहले अ, जुडता है उन में 'अ, उडाकर न्य, लगाना चाहिए यथा न्यखनत् ।

मध्यमपुरुष	चखनिथ	चखनथुः	चखन
उत्तमपुरुष.	चखान } चखन }	चखिनव	चखिनम
पूर्वकालिकक्रिया	खनित्वा } निखन्य }	निमित्त क्रिया-	खनितुम्

चर् (चरना या विचरना)

वर्त.	आज्ञा	अन.भू.	विधि.	आशिष्	अन. भ.
चरति	चरतु	अचरत्	चरेत्	चर्यात्	चरिता
सामा.भ	परो.भू.			सामा.भू.	क्रियातिपत्ति
चरिष्यति	चचार, चेरतुः	इत्यादि	अचारीत्	अचरिष्यत्	
पू.का. क्रि.	चरित्वा		नि. क्रि.	चरितुम्	

भज (भजनकरना या सेवा करना)

वर्त.	आज्ञा.	अन.भू.	विधि	आशिष	अन.भ
भजति	भजतु	अभजत्	भजेत्	भज्यात्	भक्ता
सा.भ.	परो.भू.			सामा.भू.	क्रियाति
भक्ष्यति	वभाज, भजेतुः	इत्यादि	अभाक्षीत्	अभक्ष्यत्	

(०) इस के रूपों के पहले वि, लगा देने से बांटना, अर्थ होजाता है
जिसका अर्थ है "भ्रातरौ धनं विभजतः ।"

(२३)

वृष् (वरसना)

वर्त.	आज्ञा	अन.भू.	विधि	आशिष,	अन.भ.
वर्षति	वर्षतु	अवर्षत्	वर्षेत्	वृष्यात्	वर्षिता
सा. भ.		सामा.भू.		क्रियाति.	
वर्षिष्यति		अवर्षीत्		अवर्षिष्यत्	

परोक्षभूत ।

प्र० पु०	ववर्ष	ववृषतुः	ववृषुः
म० पु०	ववर्षिथ	ववृषथुः	ववृष
उ० पु०	ववर्ष	ववृषिव	ववृषिम
पू० का०	क्रि० वर्षित्वा		नि० क्रि० वर्षितुम्

इष् (चाहना)

वर्त०	आज्ञा०	अन० भू०	विधि	आशिष्
इच्छति	इच्छतु	ऐच्छत्	इच्छेत्	इष्यात्
अन० भ०	सा० भ०		साम० भू०	
एषिता	} एषिष्यति		ऐषीत्,	ऐषिष्यात्
एषा				

क्रियाति०
ऐषिष्यत्

(२४)

परोक्षभूत

प्र०	इयेष	ईषतुः	ईषुः
म्०	इयषिथ	ईषथुः	ईष
उ०	इयेष	ईषिव	इषिम
पू० का क्रि०	इषित्वा		नि० क्रि० एषितुम्

कृष (खँचना या हलजोतना)

वर्त०	आज्ञा	अन०भू०	विधि०	आशि०	अ०भ०	सा०	भ०
कर्षति	कर्षतु	अकर्षत्	कर्षेत्	कृष्यात्	कृषा	कृक्ष्यति	
परो० भू०				सा० भू०		क्रियाति०	
चकर्ष	चकृषतुः	इत्यादि		अकृषत्		अकृष्यत्	
पू० का क्रि०	कृषित्वा					नि०क्रि०	कृष्टुम्

[Handwritten signature]
तृ (तैरना)

वर्त०	आज्ञा	अन०भू०	विधि०	आशि०	अनः	भ०	सा०	भ०
तरति	तरतु	अतरत्	तरेत्	तीर्यात्	तरिता	तरिष्यति		

(१) तृधातु के रूपों से पहले 'अव' जोड़ने से 'उतरना' अर्थ होजाता है यथा—'अश्वात् अवतरति' परन्तु जिन लकारों के रूपों में पहले 'अ' जुड़ता है उन में 'अ' उडाकर 'अवा' जोड़ना चाहिए यथा अनघतनभूत में 'अवातरत्' ।

परो० भू० सा० भू० पू० का० क्रि० नि० क्रि०
 ततार, तेरतुः अतारीव, अतारिष्णाम् तरित्वा संतीर्य तरितुम् ।

क्रि० १.
 अतारिष्यत्

ह (छीनना या लेजाना)

वर्त० आज्ञा० अन० भू० विधि. आशि० अन० भ०
 हरति हरतु अहरत् हरेत् ह्रियात् हर्ता

सा० भ० सा० भू० क्रिया०
 हरिष्यति अहर्षीत्, अहर्षाम् अहरिष्यत्

परोक्षभूत

प्र०	जहार	जहतुः	जहुः
म०	जहर्थ	जहथुः	जह
उ०	जहार	जहिव	जहिम
	जहर		
	पू. का क्रि.		नि. क्रि
	हृत्वा-छीनकर या लेजाकर		
	संहृत्य-समेटकर		हर्तुम्

(१) ह्र धातु के रूपों से पहले 'त्' लगाने से 'समेटना' 'प्र' लगाने से 'पीटना' और 'वि' लगाने से 'खेलना' अर्थ होजाता है यथ- 'लुब्धकः स्वस्थं जालं संहरति' 'रामः कृष्णं दण्डेन प्रहरति' 'बालकाः क्षेत्रे बिहरन्ति ।

स्मृ (यादकरना)

वर्त.	आज्ञा.	अन.भू.	विधि.	आशि.
स्मरति	स्मरतु	अस्मरत्	स्मरेत्	स्मर्यात्
अ.भ.	सा.भ.	सा.भू.		क्रियाति.
स्मर्ता	स्मरिष्यति	अस्मार्षीत्, अस्माष्टार्भ, अस्मरिष्यत् ।		

परोक्षभूत

प्र०	सस्मार	सस्मरतुः	सस्मरुः
म०	सस्मारिथ	सस्मारथुः	सस्मर
उ०	सस्मार } सस्मर }	सस्मारिन्न	सस्मारिन्न
	पू का.क्रि.		नि.क्रि
	स्मृत्वा } संस्मृत्य }	यादकरके	स्मर्तुम्
	विस्मृत्य-भूलकर		

(१) स्मृ धातु के रूपों से पहले 'वि' लगाने से 'भूलना' भा होजाता है यथ 'मिन्नमपि कथं विस्मरसि' ? ।

(२७)

१.
सृ (सरकना)

वर्त०	आज्ञा	अन.भू.	विधि	आशि-
सरति	सरतु	असरत्	सरेत्	स्रियात्
अन.भ.	सा.भ.	सा.भू.		
सर्ता	सरिष्यति	असार्षीत्,	असार्ष्टाम्	
		परोक्षभूत्		

प्र.	ससार	सस्रतुः	सस्रुः
म.	ससर्थ	सस्रथुः	सस्र
उ.	ससार	सस्रव	सस्रम
	ससर		
	पू.का.क्रि.		नि.क्रि.
	सृत्वा.		सर्तुम्

२
रुह (उगना या घाव भरना)

(१) इस के रूपों के पहले 'अनु' जोड़ देने से पीछा 'करना' अर्थ होजाता है परन्तु जिन लकारों 'अ' लगता है उन में 'अन्व' जोड़ना चाहिए यथा 'अन्वसरत्'

(२) रुह धातु के रूपों से पहले 'आ' जोड़ देने से 'चढ़ना, अर्थ होजाता है ।

वर्त.	आज्ञा	अन.भू.	विधि	आशिष
रोहति	रोहतु	अरोहत्	रोहैव	रुह्याव
अ.भ.	सा.भ.	परो.भू.		
रोढा	रोक्ष्यति,	रुरोह,	रुरुहतुः	इत्यादि
क्रियाति.				
अरोक्ष्यत्				

सामान्यभूत

प्र०	अरुक्षत्	अरुक्षताम्	अरुक्षन्
म०	अरुक्षः	अरुक्षतम्	अरुक्षन्
उ०	अरुक्षम्	अरुक्षाव	अरुक्षाम्
पू.का.क्रि.			नि.क्रि.
ऋद्धा, आरुद्य			आरोढुम्

हिन्दी में अनुवाद करौ

मार्गे गतं न खन, कश्चित् तस्मिन् पतिष्याति । वंशं भुवि,
 निखन्य नटः कौतुकं करोति । गावः क्षेत्रे प्रविश्य हरितं घासं च
 रन्ति । ये हरिणाः पर्वततले संचेरुः सिंहस्य गर्जनं श्रुत्वा दुःखुः
 तुलसीदासः श्रीरामचन्द्रम् अभजत् । यस्मिन् वर्षे वयं काश्यामवसाम
 तस्मिन् वर्षे मेघाः समये जलमवर्षन्, अतः सर्वत्र बहु धान्यमभवत् ।

स तत् कार्यं कर्तुं स्वयमेव ऐषीत्, यत्कर्तुमहं तमकथयाम् ।
साम्प्रतमहं गन्तुमिच्छामि यतः पूर्वदिशायमयं मेघो वर्षितुमे-
वाऽस्ति । पश्य बलीवर्दाः शकटं कर्षन्ति । यदि त्वं वर्षाभ्यः पूर्व-
मेव क्षेत्रं क्रक्षयति तर्हि ते बहु धान्यं भविष्यति । तरन्ति मनुजाः
केचित् केचित्पश्यन्ति दूरतः ।

संस्कृत में अनुवाद करो

सगर के पुत्रों ने पृथ्वी को खोदा था । नींबू खोद का

महल बना । उस ने दरखत की सारी जड़ ज़मीन में गाड़ दी
तुम्हारे ऊँट गोपाल के खेत में चरते थे । आज घोड़ा अच्छी

तरह चरकर नहीं आया इस लिए पानी भी थोड़ा ही पिया ।

सिंह अक्सर सूनी जगह में फिरा करते हैं । अरे बुझे ! तू ईश्वर
को क्यों नहीं भजता क्या अब भी दिल में धन की तृष्णा है ? ।

कहिए साहब ! आज यह धूल कैसे बरसती है ! मैं दस रुपये ले

ना चाहता हूँ क्या आप महरबानी करके देंगे ? तू थुझे पानी

- (१) मूल-रूप पुस्तक के समान । (२) सम्बन्ध-अव्यय
(३) प्रायः-अव्यय । (४) शून्य-विशेषण, यहाँ रूप पुस्तक के समान
(५) स्थान-रूप पुस्तक के समान । (६) महाशय-रूप बालक के
समान । (७) धूलि-रूप स्तुति के समान । (८) रूप्य-रूप पुस्तक
के समान । (९) कृपा-रूप विद्या के समान ।

में न खैंच मैं तैरना नहीं जानता हूँ ।

हिन्दी में अनुवाद करो

दस्यवः शून्य वने पथिकानां सर्वा संपत्तिं जहुः । नादिर-

शाहो मोहम्मदशाहस्य मायूराऽऽसनं हृत्वा पारस्यदेशमनयत् । भा-

रवाहो भारं मस्तकैः निधाय स्थितिस्थानात् पुरं हरति । वृद्धायाः

पुत्रो विदेशमगच्छत्, अतः सा तं स्मृत्वा स्मृत्वा रोदिति । हनु-

मान् राममवदत्- 'नाथ! सीता त्वामहर्निशं स्मरति' । यदि त्वं गृ-

हस्य मार्गं व्यस्मरः, तर्हि त्वं स्वगादपि बुद्धिहीनः । यतः स्वमः

मुदूंगत्वाऽपि स्वस्य नीडेन विस्मरति । सखे ! किञ्चित्सर येन रामः

सुधानिधेः समीपे स्थित्वा स्वपाठं पठेत् । वर्षासु वृक्षाः स्वयमेव

रोहन्ति । अहं ताजमहलचैत्यमारुह्य यमुनाया आगरानगरस्य च

शोभामपश्यम् । तस्य वैद्यस्य चिकित्सया मम भ्रातुः क्षतं शीघ्रत-

या रोहति ।

संस्कृत में अनुवाद करो ।

चिडीमार जाल को समेटता है । अच्छे आदमी, उन लोगों

(१) तख्त ताऊस । (२) रखकर । (३) स्टेशन । (४) ताजवीवी का राजा । (५) इलाज । (६) घाव । (७) लुब्धक-रूप वालक के

को जो विपत्ति में सहायता करते हैं कभी नहीं भूलते । जब ये लडके हटें (सरकें) तब इन की जगह तुम बैठना । जो दूसरों के लिये गड्ढे खोदते हैं वे खुद भी कुए में गिरते हैं । अगर मेहनत बरसती तो ठंड कैसे होती । अगर वह चाहे तो उसे मदद दे । अंधेरे में मेरे कपडे पकडकर किसी ने मुझे खँचा । वे आज सब दिन तालाब में तैरे इसलिए अब उनको जुकाम होगया । तलवार छीन वर्ना वह मारता है ।

थोड़े से संधिके

नियम-

(विसर्गसंधि)

(१) यदि विसर्ग से पूर्व और उत्तर दोनों आरै अकार हों तो दोनों अकारों और विसर्ग के स्थान में 'ओ' आदेश होजाता है जैसे 'कः अयम्' = कोऽयम् । 'ईश्वरः अवति' = ईश्वरोऽवति इत्यादि ।

(२) यदि विसर्ग से पूर्व 'अ' हो और आगे 'अ' के सिवाय कोई स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और पूर्व 'अ' तथा आगे के स्वर के योग से कोई संधि प्राप्त हो तो कहीं होती है

(१) स्वयम् अव्यय । (२) शांति-रूप पुस्तक के समान । (३) प्रति-दयाय-रूप बालक के समान ।

अर्थात् अकार और स्वर भिन्न ही रहते हैं यथा-‘कः आयाति’=क, आयाति । ‘बालकः इच्छति’=बालक इच्छति । ‘सूर्यः उदेति’=सूर्य उदेति । “सूर्यः एषः”=सूर्य एषः । इत्यादि ।

(३) यदि विसर्ग से पूर्व ‘आ’ हो और आगे कोई स्वर हो तो विसर्ग का लोप होजाता है और फिर संधि नहीं होती है यथा-‘कन्याः अवतरन्ति’=कन्या अवतरन्ति । ‘बालकाः इच्छन्ति’=बालका इच्छन्ति । ‘लताः उद्भवन्ति’=लता उद्भवन्ति । ‘पुरुषाः एते’= पुरुषा एते । इत्यादि ।

(४) यदि विसर्ग से पूर्व अ और आ के सिवाय कोई स्वर हो और आगे कोई स्वर अथवा किसी वर्ग के प्रथम द्वितीय वर्ग और श,ष,म् के सिवाय कोई व्यञ्जन आजावे तो विसर्ग के स्थान में ‘र्’ होजाता है यथा कविः अयम्=कविरयम् । ‘गुरुः आह’=गुरुराह । ‘ग्लौः उदेति’ =ग्लौरुदेति । ‘पतिः गच्छति’=पतिर्गच्छति । ‘शत्रुः जयति’=शत्रुर्जयति । ‘शकुनिः डीयते’=शकुनिर्डीयते । पितुः धनम्=पितुर्वनम् । ‘गौः भक्षयति’=गौर्भक्षयति । ‘शिशुः याति’ =शिशुर्याति । इत्यादि ।

(५) (क) यदि विसर्ग के आगे क या ख हो तो विसर्ग विसर्ग ही रहता है यथा-‘कः करोति’=कः करोति ।

‘कृष्णः खनति’=कृष्णः खनति ।

(ख) यदि विसर्ग के आगे च छ हो तो विसर्ग के स्थान में तालव्य श होजाता है यथा—‘गौःचरति’=गौश्चरति । ‘कृष्णः छागः’—कृष्णश्छागः ।

(ग) यदि विसर्ग के आगे ट या ठ होतो विसर्ग के स्थान में मूर्धन्य ष होजाता है यथा—‘धनुः टङ्कारः’ धनुष्टङ्कारः । ‘सुन्दरः ठकारः’ सुन्दरष्ठकारः ।

(घ) यदि विसर्ग के आगे त या थ होतो विसर्ग के स्थान में दन्त्य स होजाता है यथा—‘हंसः तरति’ हंसस्तरति । ‘द्वितीयः थकारः’—द्वितीयस्थकारः ।

(ङ) यदि विसर्ग के आगे प या फ हो तो विसर्ग का विसर्ग ही रहता है यथा—‘स्त्रियः पचन्ति’=स्त्रियःपचन्ति । वृक्षाः फलन्ति वृक्षाः फलन्ति ।

(च) यदि विसर्ग के आगे तालव्य श हो तो विसर्ग के स्थान में भी तालव्य श ही करदेना चाहिए या विसर्ग का विसर्ग ही रखना चाहिए यथा—‘हरिः शेते’=हरिश्शेते या हरिः शेते । यदि विसर्ग के आगे मूर्धन्य ष होतो विसर्ग के स्थान में भी मूर्धन्य ष ही करदेना चाहिए या विसर्ग का विसर्ग ही रखना चाहिए यथा—‘रामः षष्ठः’—रामष्षष्ठः या रामः षष्ठः । यदि विसर्ग के आगे दन्त्य स होतो यातो विसर्ग के स्थान में भी दन्त्य स ही करदेना चाहिए या विसर्ग का विसर्ग ही रखना चाहिए यथा—‘वायुःसरति’=वायुस्सरति

या वायुः सरति ।

(६) यदि विसर्ग से पूर्व अ हो और आगे किसी वर्ण के प्रथम द्वितीय वर्ण अथवा श, ष, स के सिवाय कोई व्यञ्जन होतो विसर्ग के स्थान में ओ होजाता है यथा—'कः गच्छति' = को गच्छति 'कः जयति' = को जयति इत्यादि ।

(७) यदि विसर्ग से पूर्व आ हो और आगे किसी वर्ण के प्र^० द्वितीय वर्ण अथवा श, ष, स के सिवाय कोई व्यञ्जन होतो विसर्ग का लोप होजाता है यथा—'वालकाः गच्छन्ति' = वालका गच्छन्ति 'गुणाः जयहेतवः' = गुणा जयहेतवः इत्यादि ।

(८) 'भोः' इस के आगे यदि क, ख या प, फ आवे तो विसर्ग रखना चाहिए, च्, छ आवे तो तालव्य श; ट, ठ आवे तो मूर्धन्य ष और त, थ आवे तो द्रन्त्य स् होजाता है शेष किसी स्वर या व्यञ्जन के आगे आने पर इस के विसर्ग का लोप होजाता है यथा—भो अमरेन्द्र, भो विद्वान् इत्यादि ।

(९) 'सः, एषः' इन दोनों पदों के आगे यदि कोई वर्ण न होतो इन के आगे विसर्ग रहते हैं । यदि इनके आगे अ होतो पूर्व और उत्तर अ तथा विसर्ग के स्थान में ओ होजाता है यथा—'सः अस्ति' = सोऽस्ति । 'एषः अस्ति' = एषोऽस्ति । बाकी वर्ण के आगे आजाने पर इन के विसर्ग का लोप होजाता है और सन्धि नहीं होती है —'एषः उत्तमः' = एष उत्तमः सः घटः = स घटः, इत्यादि ।

(१०) पुनः, अन्तः, प्रातः, इन शब्दों के तथा ऋकारान्त शब्दों के संबोधन के एक वचन के आगे यदि किसी वर्ण का प्रथम, द्वितीय वर्ण या श, ष, स, हों तो विसर्ग का विसर्ग ही रहता है यथा—पुनः कथयति; अन्तः पतति, प्रातः पश्यति, मातः पश्य । यदि इन वर्णों के सिवाय कोई वर्ण आगे आवे, तो इन के विसर्ग के स्थान में 'र्' होजाता है यथा—'पुनःअपि = पुनरपि । 'अन्तः आगच्छ, = अन्तरागच्छ । 'प्रातःएति, = प्रातरेति, 'प्रातःवद, प्रातर्वद । इत्यादि हिन्दी में अनुवाद और सन्धि का विच्छेद करो—

कृष्णः करोतु कल्याणम् । रामः खरनामकं राक्षसं जघान् ।

कः कालः कानि मित्राणि को देशः कौ व्ययागमौ ।

कश्चाहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः ।

वलिष्ठष्ठक्कुरश्चक्रे धनुष्टुङ्कारमद्भुतम् ॥

सागरं कपयस्तेरुश्चेरुश्च वनराजिषु ।

वृक्षाः पेतुः फलैः पूर्णास्तूर्णं वानरपीडिताः ॥

बालस्थकारमास्त्रिव्य दकारं लिखति क्रमात् ॥

हरेः श्लोकान् कविः शीघ्रं सभायामपठत्तदा ॥

पण्डिताः स्तुतिमेतस्य चक्रुस्सन्तुष्टमानसाः ।

(१) यह अन्त (जिस का अर्थ अर्धर है) शब्द का रूप नहीं है बल्कि यह अन्तर (जिस का अर्थ भीतर है) अव्यय है ।

ब.	वणिजः	वणिजोः	वणिजाम्
सं	वणिजि	वणिजोः	वणिक्षु
संयो.	हे वणिक्	हे वणिजौ	हे वणिजः

जकारान्त पुल्लिङ्ग सम्राज् (वैदिशीहि)

प्र.	सम्राट्	सम्राजौ	सम्राजः
द्वि.	सम्राजम्	सम्राजौ	सम्राजः
तृ.	सम्राजा	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भिः
च.	सम्राजे	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्यः
पं.	सम्राजः	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्यः
प.	सम्राजः	सम्राजोः	सम्राजाम्
स.	सम्राजि	सम्राजोः	सम्राट्सु
संयो.	हे सम्राट्	हे सम्राजौ	हे सम्राजः

परिट्राज् और विश्वमृज् इन शब्दों के रूप भी सम्राज् के तुल्य ही होते हैं ।

जकारान्त स्त्रीलिङ्ग स्रज्-(माला)

प्र.	स्रक्	स्रजौ	स्रजः
द्वि.	स्रजम्	स्रजौ	स्रजः

१) संन्यासी । (२) संसार का रचने वाला ब्रह्मा ।

तृ.	स्रजा	स्रग्भ्याम्	स्रग्भिः
च.	स्रजे	स्रग्भ्याम्	स्रग्भ्यः
पं.	स्रजः	स्रग्भ्याम्	स्रग्भ्यः
ष.	स्रजः	स्रजोः	स्रजाम्
स.	स्रजि	स्रजोः	स्रजु
संघो	हे स्रक्	हे स्रजौ	हे स्रजः

स्त्रीलिङ्ग रुद्र (रोग) शब्द के रूप भी स्रज के तुल्य ही होते हैं

जकारान्त नपुंसकलिङ्ग असृज् (रुधिर)

प्र.	असृक्	असृजी	असृजि
द्वि.	असृक्	असृजी	असृजि
तृ.	असृजा	असृग्भ्याम्	असृग्भिः
च.	असृजे	असृग्भ्याम्	असृग्भ्यः
पं.	असृजः	असृग्भ्याम्	असृग्भ्यः
ष.	असृजः	असृजोः	असृजाम्
स.	असृजि	असृजोः	असृजु
संघो.	हे असृक्	हे असृजौ	हे असृजि

तकारान्त पुल्लिङ्ग भृशृत् (पहाड़)

प्र.	भृशृत्	भृशृतौ	भृशृतः
------	--------	--------	--------

द्वि.	भूमृतम्	भूमृतौ	भूमृतः
तृ.	भूमृता	भूमृद्भ्याम्	भूमृद्भिः
च.	भूमृते	भूमृद्भ्याम्	भूमृद्भ्यः
पं.	भूमृतः	भूमृद्भ्याम्	भूमृद्भ्यः
ष.	भूमृतः	भूमृतोः	भूमृताम्
स.	भूमृति	भूमृतोः	भूमृतु
संयो.	हे भूमृत्	हे भूमृतो	हे भूमृतः

सुकर्मकृत् (अच्छा काम करने वाला,) मन्त्रकृत् (सलाह करने वाला या यन्त्रों का बनाने वाला) पुण्यकृत् (धर्म करने वाला) पापकृत् (पाप करने वाला) इत्यादि तकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप भूमृत् के समान होते हैं ।

जिस प्रकार कै तकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूपों में भेद होता है उस प्रकार के शब्दों के रूप नीचे लिखे जाते हैं-

1 तकारान्त पुल्लिङ्ग पठत् (पढ़ता हुआ)

प्र.	पठन्	पठन्तौ	पठन्तः
द्वि.	पठन्तम्	पठन्तौ	पठतः
तृ.	पठता	पठद्भ्याम्	पठद्भिः
च.	पठते	पठद्भ्याम्	पठद्भ्यः
पं.	पठतः	पठद्भ्याम्	पठद्भ्यः

(?) पठव्, धावत् इत्यादि शब्दों में शतृ-प्रत्यय होता है.

ष. पठतः	पठतोः	पठताम्
स. पठति	पठतोः	पठत्सु
संबो. हे पठन्	हे पठन्तौ	हे पठन्तः

चलत्, पतत्, वदत्, व्रजत्, हसत्, पचत्, वपत्, वसत्, दहत्, गच्छत्, लिखत्, जिघ्रत्, पश्यत्, पिबत्, भक्षत्, स्पृशत्, शृण्वत्, ह्वयत्, भवत्, सत्, तिष्ठत्, गायत्, जीवत्, क्रीडत्, त्यजत्, नयत्, जयत्, कुर्वत्, घ्नत्, स्वपत्, चोरयत्, ताडयत्, चिन्तयत्, रुदत्, नमद्, पृच्छत्, खनत्, चरत्, भजत्, वर्षत्, इच्छत्, तरत्, हरत्, स्मरत्, सरत्, रोहत्, इत्यादि शतृ-प्रत्ययान्त, शब्दों के रूप पुँल्लिङ्ग में पठत् शब्द के समान होते हैं। स्त्रीलिङ्ग में इन के अन्तिम तकारके स्थान में 'न्ती' करके इस प्रकार से बनेहुए पठन्ती, चलन्ती, पतन्ती इत्यादि शब्दों के रूप नदी शब्द के समान होते हैं। नपुंसकलिङ्ग में इन सब शब्दों के रूप आगे लिखे हुए नपुंसक-लिङ्ग के 'जगत्' शब्द के समान होते हैं।

कितने ही शतृ-प्रत्ययान्त शब्दों के रूपों में प्रथमा द्वितीया में पठत् शब्द के रूपों से भेद होता है इस लिए 'ददत्' शब्द के रूप लिखकर उनके नीचे वैसे मुख्य २ शब्द लिखे जाते हैं।

(१) इस का स्त्रीलिङ्ग में सती होता है।

तकारान्त पुँल्लिङ्ग ददत् (देता हुआ)

प्र	ददत्	ददतौ	ददतः
द्वि	ददतम्	ददतौ	ददतः

तृतीयादि विभक्तियों में पठव् शब्द के समान रूप होते हैं। दधत् (धारण करता हुआ) जाग्रत् (जगता हुआ) शासत् (हुकूमत करता हुआ) चकासत् (चमकता हुआ) इन सब शब्दों के रूप पुँल्लिङ्ग में ददत् के समान होते हैं। स्त्रीलिङ्ग में तकार के आगे दीर्घ इकार के जोड़ने से बने हुए 'ददती' इत्यादि शब्दों के रूप नदी शब्द के समान होते हैं। नपुंसकलिङ्ग में जगत् शब्द के समान होते हैं।

तकारान्त पुँल्लिङ्ग धनवत् (धनवाला)

प्र.	धनवान्	धनवन्तौ	धनवन्तः
द्वि.	धनवन्तम्	धनवन्तौ	धनवतः

(१) धन इत्यादि संत्रावाचक शब्दों से, धमवान् इत्यादि विशेषणवाचक शब्द बनाने के लिए मतुपू - पूत्यय किया जाता है। मतुपू में सं उ और पू का लोप होजाता है और केवल मत् शेष रहजाता है। जिन शब्दों के अन्तका या अन्त से पूर्व का वर्ण अ, आ या म होता है उन से परे मतुपू के म के स्थान में प्रायः व होजाता है जैसे धनवत्, विद्यावत्, यशस्वत् भास्वत्, किंवत् इत्यादि। अन्य शब्दों में म का म ही रहता है यथा आयुष्मत्, भूमिमत् इत्यादि।

तृ.	धनवता	धनवद्भ्याम्	धनवद्भिः
च.	धनवते	धनवद्भ्याम्	धनवद्भ्यः
पं.	धनवतः	धनवद्भ्याम्	धनद्भ्यः
ष.	धनवतः	धनवतोः	धनवताम्
स.	धनवति	धनवतोः	धनवत्सु
संबो.	हे धनवन्	हे धनवन्तोः	हे धनवन्तः

भवत् (आप) पुत्रवत्, लक्ष्मीवत्, विद्यावत्, ज्ञानवत्, यशस्वत्, भास्वत् (सूर्य)यस्वत्, अग्निवत् भूमिवत्, ककुबत्, (जिसके थुहाहो) गरुत्मत् (गरुड़), मधुमत्, बुद्धिमत् इत्यादि मत्तुप्प्रत्ययान्त (जिनके अन्त में वत् या मत् हो) शब्दों के रूप पुँल्लिङ्ग में धनवत् के समान होते हैं। स्त्रीलिङ्ग में तकार के आगे दीर्घ ईकार जोड़ देने से बने हुए धनवती, पुत्रवती इत्यादि शब्दों के रूप नदी शब्दों के समान होते हैं। नपुंसकलिङ्ग में जगत् शब्द के समान होते हैं।

पाठितवत्, चलितवत्, उदितवत्, व्रजितवत्, हसितवत् पकवत्
उप्तवत्, उपितवत्, दग्धवत्, गतवत्, लिखितवत्, घातवत्, दृष्टवत्,
पीतवत्, भाक्षितवत्, स्पष्टवत्, श्रुतवत्, हृतवत्, भूतवत्, स्थितवत्,

(१) यह-वद् धातुका रूप है। (२) यह पच्-धातु का रूप है। ३ वच्
का (४) वसू का (५) दह का (६) गम् का (७) पा (पीना) का < हका
(९) स्था का

^{१०} गीतवत्, जीवितवत्, क्रीडितवत्, त्यक्तवत्, नीतवत्, जितवत्,
^{११} कृतवत्, ^{१२} हतवत्, सुप्तवत्, चोरितवत्, ताडितवत्, चिन्तितवत्,
^{१३} रुदितवत्, ^{१४} नतवत्, पृष्टवत्, खनितवत्, चरितवत्, भक्तवत्, वृष्टवत्,
^{१५} इष्टवत्, तीर्णवत्, हृतवत्, स्मृतवत्, रूढवत्, इत्यादि क्तवत्-प्रत्ययान्त
 शब्दों के रूप पुँलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग में क्रम से धन-
 वत्-शब्द के पुँलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग के रूपों के
 समान होते हैं ।

(१०) गै का (११) हन् का (१२) स्वप् का (१३) नम् का (१४)
 प्रच्छ का (१५) भजं का (१६) नृ का (१७) रुह का (१८)
 इसी को 'क्तवत्' भी कहते हैं। इसमें केवल तवत् अत्रिंशष्ट रहजाता है।
 अन्य वर्णों का लोप होजाता है। यह कर्तृवाच्य के भूतकाल के लोप
 आता है यथा "रामः पञ्च पुस्तकानि पठितवान्" "नारायणी मानदृष्टवती"
 "वृक्षात् फलं पतितवत्" (Perfect of active voice) यही है। क्तवत्-
 प्रत्ययान्त रूपों में से 'वत्' उडा देने से क्तप्रत्ययान्त रूप बनजाते हैं
 और वे सकर्मक धातुओं से भूतकाल का कर्मवाच्य और अकर्मक धातु-
 ओं से भूतकाल का भाववाच्य बनाने में काम आते हैं यथा "रामेण
 पञ्च पुस्तकानि पठितानि" "नारायण्या अहं न दृष्टः" "वृक्षात् फलं
 न पतितम्" यहां यह भी समझलेना आवश्यक है कि कर्तृवाच्य
 (Active voice) में कर्ता से प्रथमा, और कर्म से द्वितीया विभक्ति
 ती है और क्रिया कर्ता के पुरुष और घचन के अनुसार होती है।

(तकारान्त पुल्लिङ्ग महत् (बड़ा))

प्र.	महान्	महान्तौ	महान्तः
द्वि.	महान्तम्	महान्तौ	महतः
तृ.	महता	महद्भ्याम्	महाद्भिः
च.	महते	महद्भ्याम्	महद्भिः

इस लिए यदि क्तवत् प्रत्यय का रूप काम में लौकर वाक्य बनाना होतो कर्ता से प्रथमा, कम से द्वितीया और क्रिया कर्ता के वचन तथा लिङ्ग के अनुस्वार लानी चाहिए "रामः पञ्च पुस्तकानि पठितवान्" इस वाक्य में 'पुस्तकानि' यह कर्म यद्यपि बहुवचनान्त है तथापि 'रामः' इस कर्ता के एकवचन तथा पुल्लिङ्ग होने से 'पठितवान्' यह पुल्लिङ्ग तथा एकवचन का ही क्तवत्प्रत्यय का रूप आया। "नारायणी मांन दृष्टवती" इस वाक्य में नारायणी शब्द एकवचनान्त स्त्रीलिङ्ग है इस लिए 'दृष्टवती' यह भी एकवचनान्त स्त्रीलिङ्ग का ही रूप आया। इसी प्रकार कर्ता के बहुवचनान्त होने से क्तवत् प्रत्यययान्त रूप भी बहुवचनका ही आता है यथा "इमे मनुष्याः सारगं न दृष्टवन्तः" "इमाः स्त्रियो रामायणं न श्रुतवत्यः" "इमानि फलानि कथं पठितवन्ति"। यह भी स्मरण रखना चाहिए कि कर्ता के और कर्म के पुरुष के भेद से क्रम से क्तवत्प्रत्ययान्त और क्तप्रत्ययान्त रूप नहीं बदलते हैं। यथा "अहं दृष्टवान्" "त्वं दृष्टवान्" "स दृष्टवान्"। कर्मवाच्य (Passive voice) में कर्ता से तृतीया और कर्म से प्रथमा विभक्ति होती है और क्रिया कर्मके पुरुष वचन और लिङ्ग के अनुसार होती है यथा "रामेण पञ्च पुस्तकानि पठितानि" इस वाक्य में 'पठितानि' पुस्तकानि के अनुसार नपुंसकलिङ्ग का बहुवचन है। कर्मवाच्य में भी कर्म के पुरुष भेद से क्तप्रत्ययान्त रूपों में भेद नहीं होता है यथा "तेन अहं दृष्टः, त्वं दृष्टः, स दृष्टः" इत्यादि।

पं.	महतः	महद्द्रव्याम्	महद्द्रव्यः
ष.	महतः	महतोः	महताम्
स.	महति	महतोः	महत्सु
संज्ञो.	हे महन्	हे महान्तौ	हे महान्तः

स्त्रीलिङ्ग में महत् शब्द का महती शब्द बन जाता है और उस के रूप नदी के समान होते हैं ।

महत्-शब्द के नपुंसकलिङ्ग के रूप ।

प्र.	महत्	महती	महान्ति
द्वि.	महत्	महती	महान्ति

शेष विभक्तियों में पुल्लिङ्ग के समान रूप होते हैं ।

तकारान्त स्त्रीलिङ्ग सरित् (नदी)

इस के रूप भूभृत् के समान होते हैं ।

तकारान्त नपुंसकलिङ्ग जगत् ।

प्र.	जगत्	जगती	जगन्ति
द्वि.	जगत्	जगती	जगन्ति

शेष विभक्तियों में महत् के समान रूप होते हैं ।

दकारान्त पुल्लिङ्ग सुहृद् (मित्र)

सुहृत्	सुहृत्	सुहृदः
--------	--------	--------

द्वि. सुहृदम्
 तृ. सुहृदा
 च. सुहृदे
 पं. सुहृदः
 ष. सुहृदः
 स. सुहृदि
 संबो. हे सुहृद्

सुहृदौ
 सुहृद्भ्याम्
 सुहृद्भ्याम्
 सुहृद्भ्याम्
 सुहृदोः
 सुहृदोः
 हे सुहृदौ

सुहृदः
 सुहृद्भिः
 सुहृद्भ्यः
 सुहृद्भ्यः
 सुहृदाम्
 सुहृत्सु
 हे सुहृदः

दुर्हृद् (शत्रु इत्यादि दकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप सुहृद् के समान होते हैं ।

संपद्, विपद्, आपद्, प्रातिपद्, (पड़िवा) आदि दकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप भी सुहृद् के समान ही होते हैं ।
 दकारान्त नपुंसकलिङ्ग के शब्दों के रूप भी तृतीयादि विभक्तियों में तो सुहृद् के समान ही होते हैं परन्तु प्रथमा, द्वितीया में भेद होता है यथा—

दकारान्त नपुंसकलिङ्ग हृद् (हृद्ध्य)

प्र. हृद्, हृन्दि
 द्वि. हृद्, हृदी
 शेष सुहृद् के समान ।

धकारान्त पुँल्लिङ्ग के कोई काम में आने वाले शब्द नहीं हैं

धकारान्त स्त्रिलिङ्ग क्षुध् (भूख)

प्र	क्षुत्	क्षुधौ	क्षुधः
द्वि	क्षुधम्	क्षुधौ	क्षुधः
तृ	क्षुधा	क्षुद्भ्याम्	क्षुद्भिः
च	क्षुधे	क्षुद्भ्याम्	क्षुद्भ्यः
पं	क्षुधः	क्षुद्भ्याम्	क्षुद्भ्यः
ष	क्षुधः	क्षुधोः	क्षुधाम्
स	क्षुधि	क्षुधोः	क्षुत्सु
संयो	हे क्षुत्	हे क्षुधौ	हे क्षुधः

वीरुध् (बेल), युध् (लड़ाई), क्रुध् (क्रोध) इत्यादि स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप तुध् के समान ही होते हैं ।

नकारान्त पुँल्लिङ्ग महिम्न (बड़प्पन)

प्र	महिमा	महिमानौ	महिमानः
द्वि	महिमानम्	महिमानौ	महिम्नः
तृ	महिम्ना	महिमभ्याम्	महिमभिः
च	महिम्ने	महिमभ्याम्	महिमभ्यः
प	महिम्नः	महिमभ्याम्	महिमभ्यः

ष.	महिम्नः	महिम्नोः	महिम्नाम्
स.	महिम्नि	महिम्नोः	महिम्सु
	महिम्नि		
संशो.	हे महिमन्	हे महिमानौ	हे महिमानः

गरिमन् (भारीपन) लघिमन् (छोटापन या हलकापन)
 प्रथिमन् (फैलाव) तनिमन् (पतलापन) द्रढिमन् (मजबूती)
 क्रशिमन् (दुबलापन) इत्यादि वे शब्द जिन के कि अन्त में 'अन्' हो उन के रूप 'महिमन्' के तुल्य होते हैं ।

जिन शब्दों के अन्त में 'अन्' होने पर भी रूपों में भेद होता है उनमें से कुछ के रूप लिखे जाते हैं ।

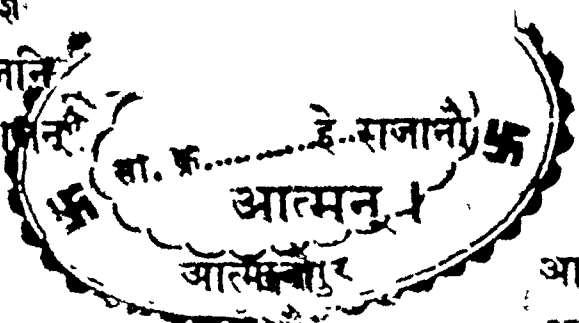
राजन् (राजा)

प्र.	राजा	राजानौ	राजानः
द्वि.	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृ.	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
च.	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पं.	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
ष.	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्

(१) इस के रूपों में 'न' की जगह 'ण' बोलना चाहिये यथा गरिमणः, इत्यादि (१) इस का स्त्रीलिङ्ग राज्ञी (रानी) होता है और उस के रूप नदी के समान होते हैं, जब यह समास के अन्त में आता है तब अकारान्त बन जाता है यथा—महाराज ।

स. राज्ञि
राजनि
संबो. हे राजनि

राजसु
हे राजानः



आत्मा
आमानम्
आत्मना
आत्मने
आत्मनः
आत्मनः
आत्मानि
हे आत्मन्

आत्मनो
आत्मनो
आत्मभ्याम्
आत्मभ्याम्
आत्मभ्याम्
आत्मनोः
आत्मनोः
हे आत्मानौ

आत्मानः
अत्मनः
आत्मभिः
आत्मभ्यः
आत्मभ्यः
आत्मनम्
आत्मसु
हे आत्मानः

(श्वन्) कुत्ता

प्र.	श्व	श्वानौ	श्वानः
द्वि.	श्वानम्	श्वानौ	श्वनः
तृ.	श्वना	श्वभ्याम्	श्वभिः
च.	श्वने	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
पं.	श्वनः	श्वभ्याम्	श्वभ्यः

(१) इस का स्त्रीलिङ्ग में श्वनी (कुत्ती) होता है और उ के रूप नदी के समान होते हैं ।

(५१)

प.	शुनः	शुनोः	शुनाम्
स.	शुनि	शुनोः	श्वसु
संबो.	हे श्वन्	हे श्वानौ	हे श्वानः

युवन् (जवान)

प.	युवा	युवानौ	युवानः
द्वि.	युवानम्	युवानौ	यूनः
तृ.	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
च.	यून	युवभ्याम्	युवभ्यः
प.	यूनः	युवभ्याम्	युवभ्यः
स.	यूनः	यूनोः	यूनान्
संबो.	हे युवन्	हे युवानौ	हे युवानः

मघवन् (इन्द्र)

प.	मघवा	मघवानौ	मघवानः
द्वि.	मघवानम्	मघवानौ	मघोनः
तृ.	मघोना	मघवभ्याम्	मघवभिः
च.	मघोने	मघवभ्याम्	मघवभ्यः

(१) इस का स्त्रीलिंग में युवति (जवान औरत) बनता है और उस के रूप मति के समान होते हैं । (२) इस का स्त्रीलिंग में मघोनी (इन्द्राणी) होता है और उस के रूप नदी के समान होते हैं ।

पं.	मघोनः	मघवभ्याम्	मघवभ्यः
ष.	मघोनः	मघोनोः	मघोनाम्
स.	मघोनि	मघोनोः	मघवसु
संबो.	हे मघवन्	हे मघवानौ	हे मघवानः

इन्नन्त पुल्लिङ्ग गुणिन् (गुणवाला)

प्र.	गुणी	गुणिनौ	गुणिनः
द्वि.	गुणिनम्	गुणिनौ	गुणिनः
तृ.	गुणिना	गुणिभ्याम्	गुणिभिः
च.	गुणिने	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
पं०	गुणिनः	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
ष०	गुणिनः	गुणिनोः	गुणिनाम्
स०	गुणिनि	गुणिनोः	गुणिषु
संबो०	हे गुणिन्	हे गुणिनौ	हे गुणिनः

शशिन् (चंद्रमा) विद्यार्थिन् हस्तिन् द्वीपिन् (बघेरा) पापिन् रोगिन्, क्रोधिन्, मन्त्रिन्, योगिन्, भोगिन् (भोगकरनेवाला या सीप) करिन् इत्यादि उन शब्दों के रूप जिन के अन्त में इन् हो गुणिन् के समान होते हैं ।

(१) गुणिन् आदि नकारान्त शब्दों के आगे 'ई' जोड़ देने से 'गुणिनी' इत्यादि स्त्रीलिङ्ग शब्द बन जाते हैं (२) इस के रूपों में न की जगह

(५३)

पथिन् (मार्ग)

प्र०	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
द्वि०	पन्थानम्	पन्थानौ	पथः
तृ०	पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
च०	पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
पं०	पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
ष०	पथः	पथोः	पथाम्
स०	पथि	पथोः	पथिषु
सर्वो०	हे पन्थाः	हे पन्थानौ	हे पन्थानः

मथिन् (मथनेवाला) के रूप भी पथिन् के समान ही होते हैं ।
सीमन् (गांव आदि की सीमा) पामन् (पांव याने खुजली)
इन स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप महिमन् के समान होते हैं ।

अन्नन्त नपुंसकलिङ्ग नामन्

प्र०	नाम	नाम्नी नामनी	} नामानि
द्वि०	नाम	नाम्नी नामनी	

शेष विभक्तियों में महिमन् के समान रूप होते हैं । धामन् इत्यादि उन नपुंसक शब्दों के रूप जिन के अन्त में 'अन्' होता है

नामन् के समान होते हैं ।

जिन शब्दों के रूपों में भेद होता है उन में से कुछ के रूप लिखे जाते हैं

ब्रह्मन् (ब्रह्म ईश्वर)

प्र.	ब्रह्म	ब्रह्मणी	ब्रह्माणि
द्वि.	ब्रह्म	ब्रह्मणी	ब्रह्माणि

शेष महिमन् के समान ।

कर्मन् (काम) के रूप भी ब्रह्मन् के समान ही होते हैं ।

अहन् (दिन)

प्र०	अहः	अह्नी अहनी	अहानि
द्वि०	अहः	अह्नी अहनी	अहानी
तृ०	अह्ना	अहोभ्यम्	अहोभिः
च०	अह्ने	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
पं०	अह्नः	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
ष०	अह्नः	अह्नोः	अह्नाम्
सप्त०	अह्नि अहानि	अह्नोः	अहस्सु

सं० हे अहः

हे अहनी

हे अहानि

गुणिन् शब्द के नपुंसकलिङ्ग के रूप

गुणि

गुणिनी

गुणीनि

गुणि

गुिनी

गुणीनी

शेष पुँलिङ्ग के समान ।

स्थायिन आदि इन्नन्त नपुंसकलिङ्ग के शब्दों के रूप भी गुणिन् के समान ही होते हैं ।

नित्यबहुवचनान्त पकारान्तस्त्रीलिङ्ग अप् (जल)

बहुवचन

प्र०	आपः	पं०	अद्भ्यः
द्वि०	अपः	ष०	अपाम्
तृ०	अद्भिः	स०	अप्सु
च०	अद्भ्यः	सं०	हे आपः

रफान्तस्त्रीलिङ्ग गिर् (बाणी)

प्र०	गीः	गिरौ	गिरः
द्वि०	गिरम्	गिरौ	गिरः
तृ०	गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः

त्र०	गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
पं०	गिरः	"	"
ष०	गिरः	गिरोः	गिराम्
स०	गिरि	गिरोः	गीर्षु
संबो०	हे गीः	हे गिरौ	हे गिरः

रेफान्त स्त्रीलिङ्ग पुर (नगरी)

द०	पृः	पुरौ	पुरः
द्वि०	पुरम्	पुरौ	पुरः
तृ०	पुरा	पूर्य्याम्	पूरिभिः
च.	पुरे	पूर्य्याम्	पूर्य्यः
पं०	पुरः	"	"
ष०	पुरः	पुरोः	पुराम्
स०	पुरि	पुरोः	पूर्यु
संबो०	हे पृः	हे पुरौ	हे पुरः

वकारान्त स्त्रीलिङ्ग दिव् (स्वर्ग)

प्र.	द्यौः	दिवी	दिवः
------	-------	------	------

द्वि.	दिवम्	दिवौ	दिवः
तृ.	दिवा	द्युभ्याम्	द्युभिः
च.	दिवे	द्युभ्याम्	द्युभ्यः
पं.	दिवः	द्युभ्याम्	द्युभ्यः
ष.	दिवः	दिवोः	दिवाम्
सं.	दिवि	दिवोः	द्युषु
संबो.	हे द्यौः	हे दिवौ	हे दिवः ।

१ अकारान्त पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग विश्

प्र.	विट्	विशौ	विशः
द्वि.	विशम्	विशौ	विशः
तृ.	विशा	विड्भ्याम्	विड्भिः
च.	विशे	विड्भ्याम्	विड्भ्यः
पं.	विशः	विड्भ्याम्	विड्भ्यः
ष.	विशः	विशोः	विशाम्
सं.	विशि	विशोः	विट्सु
संबो.	हे विट्	हे विशौ	हे विशः

(१) पुल्लिङ्ग में इस का अर्थ वैश्य है और स्त्रीलिङ्ग में प्रजा है

पुँल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग में समान

अकारान्त तादृश (वैसा या वैसी)

प्र.	तादृक्	तादृशौ	तादृशः
द्वि.	तादृशम्	तादृशौ	तादृशः
तृ.	तादृशा	तादृग्भ्याम्	तादृग्भिः
च.	तादृशे	तादृग्भ्याम्	तादृग्भ्यः
पं.	तादृशः	तादृग्भ्याम्	तादृग्भ्यः
ष.	तादृशः	तादृशोः	तादृशाम्
स.	तादृशि	तादृशोः	तादृक्षु
संबोध.	हे तादृक्	हे तादृशौ	हे तादृशः

नपुंसकलिङ्ग में ।

प्र.	तादृक्	तादृशी	तादृशि
द्वि.	तादृक्	तादृशी	तादृशि

शेषपुँल्लिङ्ग के समान ।

यादृश (जैसा या जैसी) । मादृश (मेरा जैसा या जैसी)

(१) तादृश, यादृश आदि शब्द अकारान्त भी हैं उन के पुँल्लिङ्ग में बालक के समान, नपुंसक लिङ्ग में पुस्तक के समान और स्त्रीलिङ्ग में नदीके समान रूप होते हैं ।

अस्माद्दृश् (हमःरा जैसा या जैसी) त्वादृश् (तेरा जैसा या जैसी)
 युष्माद्दृश् (तुम्हारा जैसा या जैसी) भवादृश् (आपका जैसा या
 जैसी) ईदृश् (ऐसा या ऐसी) कीदृश् (कैसा या कैसी) इन सब
 शब्दों के रूप भी तीनों लिङ्गों में तादृश् के समान होते हैं ।

नित्य स्त्रीलिङ्ग दिश् (दिशा) के रूप भी तादृश् के समान होते हैं ।
 सकारान्त पुल्लिङ्ग द्विष् (शत्रु)

प्र०	द्विट्	द्विषौ	द्विषः
द्वि०	द्विषम्	द्विषौ	द्विषः
तृ०	द्विषा	द्विष्याम्	द्विषामिः
च०	द्विषे	द्विष्याम्	द्विष्यः
पं०	द्विषः	द्विष्याम्	द्विष्यः
प०	द्विषः	द्विषोः	द्विषाम्
स०	द्विषि	द्विषोः	द्विषु
संघो०	हे द्विट्	हे द्विषौ	हे द्विषः

सूर्यन्य षकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के तथा त्विष् (कान्ति) रुष् (क्रोध)
 तृष् (प्यास) इत्यादि स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप द्विष् के समान होते हैं ।

सकारान्त पुल्लिङ्ग चन्द्रमसू

म. चन्द्रमाः

चन्द्रमसौ

चन्द्रमसः

द्वि०	चन्द्रमसम्	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
तृ.	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
च.	चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
पं.	चन्द्रमसः	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
प.	चन्द्रमसः	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
स.	चन्द्रमसि	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसु
संघो	हे चन्द्रमः	हे चन्द्रमसौ	हे चन्द्रमसः

वेद्यम् (ब्रह्मा) शब्द के रूप भी चन्द्रमम् के समान ही होते हैं ।

सकारान्त पुल्लिङ्ग लघोयस् (छोटा)

प्र.	लघीयान्	लघीयांसौ	लघीयांसः
द्वि.	लघीयांसम्	लघीयांसौ	लघीयसः
तृ.	लघीयान्	लघीयोभ्याम्	लघीयोभिः
च.	लघीयसे	लघीयोभ्याम्	लघीयोभ्यः
पं.	लघीयसः	लघीयोभ्याम्	लघीयोभ्यः
प.	लघीयसः	लघीयसोः	लघीयसाम्
स.	लघीयसि	लघीयसोः	लघीयसु
संघो.	हे लघीयः	हे लघीयांसौ	हे लघीयांसः

(१) लघोयस् इत्यादि ईयस्-(ईयसुन्) -प्रत्ययान्त शब्दों के आगे ई लगा देने से लघीयसी, ज्यायसी इत्यादि स्त्रीलिङ्ग शब्द बनजाते हैं । उन के रूप नदी के समान होते हैं ।

द्वि.	आशिषम्	आशिषौ	आशिषः
तृ.	आशिषा	आशीर्भ्याम्	आशीर्भिः
च.	आशिषे	आशीर्भ्याम्	आशीर्भ्यः
पं.	आशिषः	आशीर्भ्याम्	आशीर्भ्यः
ष.	आशिषः	आशिषोः	आशिषाय
स.	आशिषि	आशिषोः	आशिषु
संबो.	हे आशीः	हे आशिषौ	हे आशिषः

सकारान्त नपुंसकालिङ्ग यशस् ।

प्र.	यशः	यशसी	यशांसि
द्वि.	यशः	यशसी	यशांसि
तृ.	यशसा	यशोभ्याम्	यशोगिः
च.	यशसे	यशोभ्याम्	यशोभ्यः
पं.	यशसः	यशोभ्याम्	यशोभ्यः
ष.	यशसः	यशसोः	यशसाय
स.	यशासि	यशसोः	यशस्तु
संबो.	हे यशः	हे यशसी	यशांसि

मनस्, पयस् (दूध या जल) सरस् (तालाब) तेजस्, तमस्, शिरस् इत्यादि असन्त नपुंसकालिङ्ग के शब्दों के रूप यशस् के समान होते हैं। लघीयस् आदि जिन ईयस्-प्रत्ययान्त शब्दों के

रूप पहले लिखे जा चुके हैं उनके भी नपुंसकलिङ्ग में यशस् के समान ही होते हैं ।

अर्चिस् (किरण)

प्र.	अर्चिः	अर्चिषी	अर्चीषि
द्वि.	अर्चिः	अर्चिपी	अर्चीषि
तृ.	अर्चिषा	अर्चिभ्याम्	अर्चिभिः
च.	अर्चिषे	अर्चिभ्याम्	अर्चिभ्यः
पं.	अर्चिषः	अर्चिभ्याम्	अर्चिभ्यः
ष.	अर्चिषः	अर्चिषोः	अर्चिषाम्
स.	अर्चिषि	अर्चिषोः	अर्चिषु
संज्ञो.	हे अर्चिः	हे अर्चिषी	हे अर्चीषि

ज्योतिस् (तारा या प्रकाश) हविस् (होम करने का पदार्थ) इत्यादि इसन्त नपुंसकलिङ्ग के शब्दों के रूप अर्चिस् के समान होते हैं ।



आयुस् (उम्र)

प्र.	आयुः	आयुषी	आयूषि
द्वि.	आयुः	आयुषी	आयूषि
तृ.	आयुषा	आयुभ्याम्	आयुभिः

(६५)

च.	आयुषे	आयुर्म्याम्	आयुर्भ्यः
पं.	आयुषः	आयुर्भ्याम्	आयुर्भ्यः
ष.	आयुषः	आयुषोः	आयुषाम्
सप्त.	आयुषि	आयुषोः	आयुषु
संबो.	हे आयुः	हे आयुषी	हे आयुषि

चक्षुस्, धनुस्, वपुस्, (शरीर) इत्यादि वसन्त नपुंसकलिङ्ग के शब्दों के रूप आयुस् के समान होते हैं ।

हकारान्त पुँलिङ्ग मधुलिह् (भौरा)

मधुलिह्	मधुलिहौ	मधुलिहः
मधुलिहम्	मधुलिहौ	मधुलिहः
मधुलिहा	मधुलिहभ्याम्	मधुलिहभि
मधुलिहे	मधुलिहभ्याम्	मधुलिहभ्यः
मधुलिहः	मधुलिहभ्याम्	मधुलिहभ्यः
मधुलिहः	मधुलिहोः	मधुलिहाम्
मधुलिहि	मधुलिहोः	मधुलिहसु
हे मधुलिह्	हे मधुलिहौ	हे मधुलिहः

हकारान्त पुँलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप मधुलिह् के

समान होते हैं । स्त्रीलिङ्ग उपानह् शब्द के रूपों में भेद होता है इस लिए उस के रूप लिखे जाते हैं ।

उपानह् (जूता)

प्र.	उपानत्	उपानहौ	उपानहः
द्वि.	उपानहम्	उपानहौ	उपानहः
तृ.	उपानहा	उपानद्भ्याम्	उपानद्भिः
च.	उपानहे	उपानद्भ्याम्	उपानद्भ्यः
प.	उपानहः	उपानद्भ्याम्	उपानद्भ्यः
ष.	उपानहः	उपानहोः	उपानहाम्
स.	उपानहि	उपानहोः	उपानत्सु
संबो	हे उपानत्	हे उपानहौ	हे उपानहः

हिन्दी में अनुवाद करो ।

जलमुचां गर्जनं श्रुत्वा मयूराः केकां कुर्वन्ति । तपस्विनः प्रायो वृक्षाणां त्वचः परिदधति । वणिजो व्यापारेण धनवन्तो भवन्ति । सम्राज आज्ञां सर्वे जनाः शिरसि धारयन्ति । अस्यां सृजि गन्धं घ्रातुं भ्रमरास्तिष्ठन्ति । असृजो विन्दून् दृष्ट्वा २ व्याधो हरिणमनुगच्छति । अहं विन्ध्यनामकं भूभृतं द्रष्टुमिच्छामि । पापकृतः सुखेन

(१) मयूर की वाणी का नाम केका है ।

न जीवन्ति। पठतोऽपि विद्यार्थिनः किं ताडयसि ? । कार्यवशाद्द्रात्रौ
ग्रामं गच्छन्त्याः कालिन्या हृदये कम्पोऽभवत् । नद्यां तरत्पुष्पामिदं
विलोक्य बालास्तटे तेन सह व्रजन्ति । जाग्रतोऽपि कथं चौरान्
नापश्यन् रक्षका इमे। शासतो जार्जराजस्य नास्ति चौरभयं क्वचित् ।
संस्कृत में अनुवाद करो ।

धनवान् लोग बड़े २ महलों में रहते हैं । आप कहां जायेंगे ? ।
जिन्होंने बचपन में विद्या नहीं पढ़ी वे जवानी में पश्चात्ताप करते
हैं । बड़े लोग कहते हैं कि तकलीफ में धीरज ही अच्छा है ।
पुराने आदमियों में बड़ी ताकत थी । यद्यपि जगत् की सब
चीजें नष्ट होनेवाली हैं तो भी हम उनके बिना गुजारा नहीं करस-
कते । जो मीठा बोलते हैं उन के दुश्मन भी दोस्त होजाते हैं ।
हम पड़वा को पाठ नहीं पढ़ते हैं । खाना भूख को और पानी
प्यास को मिटाता है । हे ईश्वर ? तेरी महिमा कहने को मनुष्य की
वाणी कभी समर्थ नहीं है ।

(१) बाल्यावस्था-रूप विद्या के समान । (२) यौवन-रूप पुस्तक के
समान । (३) विपद् । (४) धैर्य-रूप पुस्तक के समान । (५) श्रेष्ठ-
विशेषण, यहां रूप पुस्तक के समान । (६) नश्वर-विशेषण । (७)
'बिना' यह संस्कृत अव्यय है इसके योग में द्वितीया, तृतीया-या पञ्चमी
बिभक्ति आती है । (८) समय वाचक शब्दों के साथ यदि को हो तो
उन से प्रायःसप्तमी होती है (९) नी, या इधातु के पदके भप लगाने
से मिटाना अर्थ होता है ।

हिन्दी में अनुवाद करो

कः सुहृत् सहजो राज्ञाम् ? न कोऽपि । महाराजश्चन्द्रगुप्तः स्व-
 गुरोश्चाणक्यस्य मतेन राज्यमकरोत् । आत्मानं सततं रक्षेत् । राज्ञी
 पात्रिनी भीमसिंहस्य भार्या बभूव । महाराजो युधिष्ठिरः कदापि
 गुरुणामाज्ञाया उल्लङ्घनं न चकार । श्वानःस्वामिनो द्वारि तिष्ठन्ति ।
 अस्याः शुन्याश्चत्वारः शिशवो दुग्धं पिबन्ति तान् दृष्ट्वा पञ्चमोऽपि
 धावन् आगच्छति । युवानः पुरुषा बलस्य गर्वेण वृद्धान् उपहसन्ति
 तत्तेषामनुचितं कार्यम् । गुरुरेकः काविरैकःसदासि मघोनः कलाधरो-
 ऽप्येकः । अद्भुतमत्र सभायां गुरवः कवयः कलाधराश्च सर्वे । यत्र
 गुणिनामादरो न भवति तत्र लक्ष्मीर्न निवसति । विद्यार्थिनः पापिनां-
 सङ्गं दूरतस्त्यजेयुः । पथि राज्ञः करिणस्तिष्ठन्ति कथं गच्छेयम् ? ।
 मन्था दधि मथाति । तस्य ग्रामस्य सीम्नि यः स्तम्भोऽस्ति तस्मिन्
 बहूनां राज्ञां नामानि सन्ति । ये कुर्वन्ति सदा श्रेष्ठं कर्म ते सुखिनः
 सदा । अहन्यहनि गच्छन्ति भूतानि यममन्दिरम् । अन्ये स्थिरत्व-
 मिच्छन्ति किमाश्चर्यमतः परम् ? ।

(१) स्वाभाविक । (२) राय (३) सदा (४) द्वार-शब्द स्त्रीलिङ्गका
 है इस के रूप गिर-शब्द के समान होते हैं और अर्थ दरवाजा है ।

५) लक्ष्मी-शब्द के प्रथमा के एक वचनमें विसर्ग होते हैं । (६) प्राणी ।

संस्कृत में अनुवाद करो ।

दिन को काम कर और रात को सो । जैसा बड़ है वैसी ही तू है । सेनापति ने गांव के लोगों को पूछा—“कहो बादशाह के दुश्मन किस दिशा में गए हैं ?” । छोटे से काम में बड़ा स्वर्च । शिवनन्दशर्मा खुद भी पण्डित हैं और उन की स्त्री भी पढ़ी हुई है । जन्मपत्र को देखकर ज्यौतिषी ने कहा कि यह लड़का चिरायु होगा । सास बहूको अक्षीस देती है । विद्या और दान से मनुष्य का यश होता है । पहले दिल में विचार पीछे मुँह से कह । वैद्य कहते हैं कि घीक खाने से आदमी की उम्र बड़ी होती है । लड़ाई की जगह से आते हुए मैंने धनुष की ठड्कार सुनी ।

हिन्दी में अनुवाद करो ।

स्थायीनि यस्य कार्याणि तस्य सेवा सुखप्रदा । न गिरां
नाऽपि मनसो विषयोऽसि महेश्वर ! । अद्भिस्तृणैश्च धान्यैश्च पूर्णाः
सन्तु पुरस्तात् । विशः सन्तु प्रसनन्नास्ते सन्तु पुत्राश्च पण्डिताः ।
यादृगस्याऽभवद् दण्डो न दोषस्तादृशोऽभवत् । तादृशामपि शि-
ष्यः स कथं दोषं समाचरत् ! । यस्यां दिशि द्विषः सन्ति तस्यां

(१) व्यय-रूप बालक के समान । (२) आराम देने वाली । (३) सम्म और आ पहले जोड़ देने से चर्-धातु का अर्थ करना होजाता है ।

क. पु.
ख. पु.

जहपिथ
जहर्ष

जहृपथुः
जहृपिथ

जहृष
जहृषिम

शतृ-प्रत्ययान्त हृष्यत् ।
नश (नष्ट होना)

वर्त. चश्याति
अन भ. अनशिता
नशिष्यति

आज्ञा नश्यतु
सा. भ. नशिष्यति

अन. भू. अनश्यत्
क्रियाति. अनशिष्यत्

विधि नश्येत्
सामा. भू. अनशत्
आशि. नश्यात्
परोक्ष भू. ननाश, नेशतुः

शतृ-प्रत्ययान्त नश्यत् ।

शुष् (सूखना)

वर्त. अज्ञा शुष्यति
क्रियाति० सा० भू०
अशोक्ष्यत् अशुषत्

अन. भू. अशुष्यत्
सा० भू०

विधि. आशि. अन. भ० सा० भ०
शुष्येत् शुष्यात् शोष्ठा शोक्ष्यति
परो० भू०

अशोक्ष्यत् अशुषत् शुशोष, शुशुषतुः शुशुषुः इत्यादि ।

शतृ-प्रत्ययान्त शुष्यत् ।

कुप् क्रुद्ध होना ।

(१) कुप्-धातुके योग में जिस पर क्रोध हो उस से चतुर्थी होती है
अथा " सामेसमनो दुःशासनाय कुप्यति ।

वर्त. आज्ञा. अन. भू. विशि आशि. अन. भं. सा. भ.
कुप्यति. कुप्यतु अकुप्यत् कुप्येत् कुप्यात् कोपिता कोपिष्यति
क्रियाति. सामा. भू. परोक्ष भूत्
अकोपिष्यत्, अकुपत् चुकोप, चुकुपतुः, चुकुपुः इत्यादि

पू का. क्रि. }
कुपित्वा } शतृप्रत्ययान्त-कुप्यत्
प्रकुप्य

स्ना (स्नान करना)

वर्त. आज्ञा अन. भू. विधि
स्ननि स्नातु अस्नात् अस्नाताम्, अस्नुः इत्यादि स्नायात्
आशि. अन. भं. सा. भ. क्रियाति. सा. भू.
स्नायात् स्नायास्ताम्, स्नाता स्नास्यति अस्नास्यत् अस्नासीत्
अस्नासीष्टाम् इत्यादि

परोक्ष भूत्०

सस्नौ सस्नतुः सस्नुः इत्यादि०

पूर्व. का. क्रि० }
स्नात्वा } शतृप्रत्ययान्त-स्नात्

नि० क्रि०
स्नातुम्

लिप् (लीपना)

चर्त०	आज्ञा०	अन० भू०	त्रिधि०	आशि०	अन० म०	सा० भ०
लिम्पति	लिम्पतु	अलिम्पत्	लिम्पेत्	लिप्यात्	लेप्ता	लेप्स्यति
क्रियाति०	सा० भू०	परोक्ष	भूत			
अलेप्स्यत्	अलिपत्	लिलेप,	लिलिपतुः,	लिलिपुः		
पू० का० क्रि०	}	शतृप्रत्ययान्त-लिम्पत्,		नि० क्रि०		
लिप्त्वा				लेप्तुम्		

अभिनन्द (पसन्दकरना)

चर्त०	आज्ञा	अन० भू०	त्रिधि
अभिनन्दति	अभिनन्दतु	अभ्यनन्दत्	अभिनन्देत्
आशिष्	अन० म०	स० भू०	
अभिनन्द्यात्	अभिनन्दिता	अभिनान्दिष्यति	
क्रियाति०	सामान्य भूत०		
अभ्यनन्दिष्यत्	अभ्यनन्दीत्,	अभ्यनन्दिष्टाम्,	अभ्यनन्दिषुः
		परोक्ष भूत ।	
प्र० पु०	अभिनन्द	अभिनन्दतुः	अभिनन्दुः
म० पु०	अभिनान्दिथ	अभिनन्दथुः	अभिनन्द
उ० पु०	अभिनन्द	अभिनन्दिव	अभिनन्दिम
	पू० का० क्रि०	शतृप्रत्ययान्त	नि० क्रि०
	अभिनन्द्य	अभिनन्दत्	अभिनन्दिदुम्

सिच् (सींचना)

वर्त०	आज्ञा	अन० भू०	विधि	आशिष्	अन० भ०
सिञ्चति	सिञ्चतु	असिञ्चत्	सिञ्चेत्	सिञ्च्यात्	सेक्ता
सा० भ०	क्रियाति.	सामा० भू०		परोक्ष भूत्	
सेक्ष्यति	असेक्ष्यत्	असिञ्चत्	सिषेच,	सिषिचतुः,	सिषिचुः
पूर्व० का०	क्रि०			नि० क्रि०	
सिक्त्वा	}	शतृमत्यान्तः	}	सेक्तुम्	
अभिषिच्य		सिञ्चत्		अभिषेक्तुम्	

मुच् (छोड़ना)

वर्त०	आज्ञा	अन० भू०	विधि	आशिष्	अन० भ०	सा० भ०
मुञ्चति	मुञ्चतु	अमुञ्चत्	मुञ्चेत्	मुञ्च्यात्	मोक्ता	मोक्ष्यति०
क्रियाति०	सा० भू०			परो० भू०		
अमोक्ष्यत्	अमुचत्	मुमोच	मुमुचतुः	मुमुचुः		

हिन्दी में अनुवाद करो ।

स्वामिन आज्ञां विना कदाऽपि कस्यापि गृहे न विशेत् । बालकाः
करणं दृष्ट्वा हृष्यन्ति । यदि सोऽपव्ययं नाकरिष्यत् तर्हि तस्य धनं

कदाऽपि नानशिष्यवत् । एतानि सर्वाणि सरांसि िदावे शोक्षयन्ति ।
 गुरुश्छात्राय कुप्यति यतः स स्वपाठं नास्मरत् । पश्य लोका
 भक्तिवशात् पौषमासेऽपि गङ्गायाः शीतले जले स्नान्ति । श्वोऽहं
 गृहाङ्गणं गोमयेन मृदा च लेप्तास्मि । शिक्षाविभागाध्यक्षो यस्य यस्य
 शिक्षकस्य पाठनप्रणालीमभ्यनन्दीत् तस्य तस्य वेतनवृद्धिमकार्षीत् ।
 सूर्योदयात् पूर्वमेव सर्वान् वृक्षान् सिञ्च येन बलीवर्दानां धर्मप्रयुक्तं
 कष्टं न भवेत् । त्वमन्तः प्रविश्य पश्य रामस्य वेश्मनि के के सन्ति ।

संस्कृत में अनुवाद करो ।

भाई ! गुफा में न घुस इस में एक शेर रहता है । वे मुझे
 देखकर बहुत खुश हुए ! दुष्टों की संगति से बुद्धि नष्ट होजाती है ।
 वृष्टिके अभाव से सारे वृक्ष सूखगए । आप मुझ पर कर्चों नाराज
 हुए मैने तो कोई बात नहीं कहीथी । मैं सुबह भी नहाता हूँ
 और श्याम को भी । उस कंजूस आदमी ने धन के घड़े का मुंह
 मिट्टी से लीपदिया । उस के घमण्ड से भरेहुए व्यवहार पसन्द

(१) गर्मी - (२) घरका आँगन (३) डाइरेक्टर । (४) पढाने
 का तरीका । (५) धूपके सबुबसे । (६) गुहा-रूपबद्धि-समान ।

७) रूपण- रूपबालक के सनान ।

नहीं करता हूँ । चित्रकूट में सीता अपने हाथों से दरखतों को सींचती थी ।

भक्ष (तोड़ना)

वर्तमान ।

प्र० पु० भनक्ति
म० पु० भनक्षि
उ० पु० भनज्मि

भङ्कः
भङ्कथः
भञ्ज्वः
आज्ञा ।

भञ्जन्ति
भङ्कथ
भञ्जमः

१० पु० भनक्तु
म० पु० भङ्गिधि
उ० पु० भनजानि

भङ्काम्
भङ्कम्
भनजाव
अनद्यतन भूत ।

भञ्जन्तु
भङ्क
भनजाम

प्र० पु० अभनक्
म० पु० अभनक्
उ० पु० अभनजम्

अभङ्काम्
अभङ्कम्
अभञ्ज्व
विधि ।

अभञ्जन्
अभङ्क
अभञ्जम

प्र० पु० भञ्ज्यात्
म० पु० भञ्ज्याः

भञ्ज्याताम्
भञ्ज्यातम्

भञ्ज्युः
भञ्ज्यात

उ० पु० भञ्ज्याम्	भञ्ज्याव	भञ्ज्याम्
अन० भ० सा० भ० क्रियातिः	परौक्षभूत	
भङ्गा भङ्क्ष्याति	अभङ्क्ष्यत् वभञ्ज, वभञ्जतुः, वभञ्जुः	इत्यादिः
	सामान्य भूत ।	

प्र० पु० अभाङ्क्षीव	अभाङ्क्षताम्	अभाङ्क्षुः
म० पु० अभाङ्क्षाः	अभाङ्क्षम्	अभाङ्क्ष
उ० पु० अभाङ्क्षम्	अभाङ्क्ष्व	अभाङ्क्षम्
पू० का० क्रि०	शतृप्रत्यन्त	नि० क्रि०
भङ्क्त्वा	भञ्जन्	भङ्क्त्वम्
अवभञ्ज्य		

आशीश

भञ्ज्यात्

ग्रह (पकडना या लेना)

वर्तमान ।

प्र० पु० गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
म० पु० गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
उ० पु० गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः
	आज्ञा ।	
प्र० पु० गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
म० पु० गृह्णाण	गृह्णीवम्	गृह्णीत

उ० पु०	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम
		अनद्यतन भूत ।	
प्र० पु०	अगृह्णाव	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
अ० पु०	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
उ० पु०	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम
		विधि ।	
प्र० पु०	गृह्णीयाव	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः
म० पु०	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
उ० पु०	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम
आशिष्	अन० भ०	सा० भ०	क्रियाति०
गृह्णाव	ग्रहीता	ग्रहीष्यति	अग्रहीष्यत्
		परोक्षभूत ।	
प्र० पु०	जग्राह	जगृहतुः	जगृहुः
म० पु०	जग्राहिथ	जगृहथुः	जगृह
उ० पु०	जग्राह	जगृहिव	जगृहिम
		सामान्यभूत ।	
	अग्रहीव	अग्रहीष्टाम्	अग्रहीषुः
	अग्रहीः	अग्रहीष्टम्	अग्रहीष्ट
	अग्रहीषम्	अग्रहीष्व	अग्रहीष्व

क्री (खरीदना) ✓

वर्तमान ।

प्र० पु०	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
म० पु०	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
उ० पु०	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः

आज्ञा ।

प्र० पु०	क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु
म० पु०	क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत
उ० पु०	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाव

अनद्यतन भूत ।

प्र० पु०	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
म० पु०	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
उ० पु०	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

त्रिविधि

प्र० पु०	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
म० पु०	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
उ० पु०	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम
आशिष्	अन० भ०	सा० भ०	क्रियाति०
क्रीयात्	क्रेता	क्रेष्यति	अक्रेष्यत्

(८१)

परोक्षभूत ।

प्र० पु०	चिक्राय	चिक्रियतुः	चिक्रियुः
म० पु०	चिक्रायिथ	चिक्रियथुः	चिक्रिय
उ० पु०	चिक्राय	चिक्रियिव	चिक्रियिम्

सामान्यभूत ।

अक्रैषीत्	अक्रैष्टाम्	अक्रैषुः
अक्रैषीः	अक्रैष्टम्	अक्रैष्ट
अक्रैषम्	अक्रैष्व	अक्रैष्म

पू० का० क्रि०
क्रीत्वा

शतृप्रत्ययान्त-क्रीणत्

नि० क्रि०
क्रेतुम्

प्री (खुश करना)

इस के रूप भी क्रीके समान ही होते हैं । परोक्षभूत पिप्राय
पिप्रियतुः पिप्रियुः इसादि

बन्ध (बाँधना)

प्र० पु०	बध्नाति	बध्नीतः	बध्नन्ति
म० पु०	बध्नासि	बध्नीथः	बध्नीथ
उ० पु०	बध्नामि	बध्नीवः	बध्नीमः

(८२)

आज्ञा ।

अ. पु.	वध्नात्	वध्नीताम्	वध्नन्तु
म. पु.	वधान	वध्नीतम्	वध्नीत
उ. पु.	वध्नानि	वध्नाव	वध्नाम

अनद्यतन भूत ।

प्र. पु.	अवध्नात्	अवध्नीताम्	अवध्नन्
म. पु.	अवध्नाः	अवध्नीतम्	अवध्नीत
उ. पु.	अवध्नाम्	अवध्नीव	अवध्नीम

विधि ।

प्र. पु.	वध्नीयात्	वध्नीयाताम्	वध्नीयुः
म. पु.	वध्नीयाः	वध्नीयाताम्	वध्नीयात्
उ. पु.	वध्नीयाम्	वध्नीयाव	वध्नीयाम

आशिष्

अन. भ.

सा. भ.

क्रियातिः

वध्यात्

वन्धा

अन्त्स्यति

अभन्त्स्यत्

परोक्ष भूत ।

ववन्ध	ववन्धतुः	ववन्धुः
ववन्धिय	ववन्धथुः	ववन्ध
ववन्ध	ववन्धिव	ववन्धिम

सामान्य भूत ।

(८३)

अभान्त्सीत्	अवान्द्धाम्	अभान्त्सुः
अभान्त्सीः	अवान्द्धम्	अवान्द्ध
अभान्त्सम्	अभान्त्स्वः	अभान्त्स्म
पू. का. क्रि.	शतृ-प्रत्ययान्त	नि. क्रि.
वद्ध्वा	बधन्त्	बन्द्मुम्

अश् (भोजन करना)

वर्त.	आज्ञा.	अन. भू.	विधि	आशिष्
अश्नाति	अश्नातु	आश्नात्	अश्नीयात्	अश्नात्
अन. भ.	सा. भ.	क्रियाति.		सा. भू.
अशिता	आशिष्यति	आशिष्यत्		आशीत्
	परोक्ष भूत् !			
आश	आशतुः			आशुः
आशित्थ	आशथुः			आश
आश	आशिव			आशिम
पू. का. क्रि.-अशित्वा ।	शतृप्र-अश्त् ।			नि. क्रि.-अशितुम् ।

मन्थ् (मथना)

वर्त.	आज्ञा	अन. भू.	विधि	आधि
मथ्नाति	मथ्नातु	अमथ्नात्	मथ्नीयात्	मथ्

अन. म. सा. भं.

क्रियाति. परोक्ष. सा. भं.

मन्थिता मन्थिष्यति

अमन्थिष्यत् ममन्थ अमन्थीत्

पू. का. क्रि.-मथित्वा ।

शतृ-प्र. मथन्त् । नि. क्रि.-मन्थितुम् ।

शक् (करना)

वर्तमाव ।

प्र. पु.	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
म. पु.	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ
उ. पु.	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः

आज्ञा ।

प्र.पु.	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
म.पु०	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
उ०पु०	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम

अनद्यतन भूत ।

१०पु०	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
०पु०	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
१पु०	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम

विधि ।

(८५)

प्र० पु०	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
म० पु०	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
उ० पु०	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम्
आशिष्	अन० भ०	सा. भ.	क्रियाति० सा० श्रु०
शक्यात्	शक्ता	शक्ष्यति	अशक्ष्यत् अशक्यत्
		परोक्ष भूत ।	

प्र० पु०	शशाक	शैकतुः	शैकुः
म० पु०	शैकिथ	शकथुः	शैक
न० पु०	शशाक, } शशक	शैकिव	शैकिम

शतृ-प्रत्ययान्त
शक्नुवत्



छिद् (क्राटना)

वर्तमान ।

प्र० पु०	छिनत्ति	छिन्तः	छिन्दन्ति
म० पु०	छिनत्सि	छिन्थः	छिन्थ
उ० पु०	छिनात्सि	छिन्द्रः	छिन्म
		आज्ञा ।	
प्र० पु०	छिनत्त	छिन्ताम्	छिन्दन्तु

(८६)

म०पु०	छिन्दि	छिन्तम्	छिन्त
उ०पु०	छिनदानि	छिनदाव	छिनदाम
		अनद्यतन भूत ।	
प्र०पु०	अच्छिनत्	अच्छिन्ताम्	अच्छिन्दन्
म०पु०	अच्छिनः	अच्छिन्तम्	अच्छिन्त
उ०पु०	अच्छिनदम्	अच्छिन्दू	अच्छिन्म
		विधि ।	
प्र०पु०	छिन्धात्	छिन्धाताम्	छिन्दुः
म०पु०	छिन्धाः	छिन्धातम्	छिन्धात
उ०पु०	छिन्धाम्	छिन्धाव	छिन्धाम
आशिष्	अन०भ०	सा० भ० क्रियाति०	सा० भू०
छिधात्	छेत्ता	छेत्स्यति अछेत्स्यत्	अच्छिदत्
		परोक्ष भूत ।	
प्र०पु०	चिच्छेद	चिच्छिदतुः	चिच्छिदुः
म०पु०	चिच्छेदिथ	चिच्छिदथुः	चिच्छिद
उ०पु०	चिच्छेद	चिच्छिदिथ	चिच्छिदिम

प० काः क्रि०-छित्वा । शतृप्र० छिन्दत् । नि०क्रि०-छेतुम्

भिद् (फाड़ना)

वर्त.	आज्ञा	अन. भू.	विधि.	आशिष्.
भिनत्ति	भिनत्तु	अभिनत्	भिन्धात्.	भिधात्
अन. भू.	सा. भ.	क्रियाति.	परो. भू.	सा. भू.
भेत्ता	भेत्स्यति	अभेत्स्यत्	विभेद्	अभिदत्

हिन्दी में अनुवाद करो:—

ह्यः प्रकम्पनी बहून् वृक्षानभकन् । रे वीर ! करे स्वङ्गं गृहाण शत्रुं
जहि च । मनुष्यः सर्वदा येषां वस्तूनामाश्यकता भवेत् तानि एव
क्रीणीयात् । गौराङ्गा बहुषु सरित्सु सेतूनवध्नन् । अयं वृद्धो बालान्
वृक्षान् सिञ्चति परमेतेषां फलानि कश्चिदन्य एव जनोऽशिष्यति ।
यदि त्वं तानि फलानि ग्रहीतुमशक्ष्यस्तिर्हि कदापि नामोक्ष्यः । इमां
शुष्कां शाखां श्वश्छेत्तास्मि । प्रीणा ते यःसुचरितैः पितरौ स पुत्रः ।
देवाः समुद्रममथनन् । अश्वमेधं कुर्वन् रामो यमश्वं सुयोच तं
वाल्मीकेराश्रमे तस्य पुत्रो लवो बबन्ध । इमान् वृन्ताकान् वस्त्रे
बध्वा गृहं नय नोषेत् कथमपि नेतुं न शक्ष्यसि ।

संस्कृत में अनुवाद करो:—

इस लकड़ी को हाथ से तोड़ और यह रूपया ले । भारतवर्ष में

(१) आंधी- (जोरकी हवा), (२) पुल, (३) वेगन, (४) रूप्य-रूप
पुस्तकके समान ।

स्त्रियां पति का नाम नहीं लेती हैं । कल आपने कौन कौन सी कितानें खरीदीं ? । इन्तहान में पास होकर उस ने मुझे खुश करदिया । अगर तू घोड़े को पहले ही खूँटे से बांधदेता तो वह क्यों भगता । इस भातको कुत्ते ने झूलिया इसलिए मैं नहीं खाऊंगा । मैंने तुम्हारा हाथ पकड़ लिया अब तुम नहीं जासकते हो । हे राजन् ! युद्ध में शत्रुओं के सिरों को काटो यही इस समय हमारी अस्तीस है । इस थैले में लड्डू थे इसलिए कुत्ते ने इसे फाड़डाला और लड्डू खागया । इन्दिरा ! मैं दही मथूंगी तू रई लेआ ।

धातु (क्रिया)

पूज (पूजना)

वर्त.	आज्ञा	अन. भू.	विधि	आशिष्
पूजयति	पूजयतु	अपूजयत	पूजयेत्	पूज्यात्

(१) परीक्षा-रूप विद्या के समान । (२) सफल-विशेषण । (३) शंकु-रूप गुरुक समान । (४) धाव-भागना-रूप ब्रज के समान-परोक्षभूत दधाव इत्यादि । (५) ओदन-रूप बालक के समान । (६) पुटक-रूप क समान । (७) श्रुब्ध-रूप बालक के समान ।

अन. म० सा० भ० क्रियाति० परो० भू० सा० भू०
पूजयिता पूजयिष्यति अपूजयिष्यत् पूजयामास अपूपुजत्
पू० का० क्रि० पूजयित्वा शतृप्रत्य-पूजयत् नि० क्रि० पूजयितुम्

पुर (भरना)

वर्त० आज्ञा अन० भू० विधि आशिषू
पूरयति पूरयतु अपूरयत् पूरयेत् पूर्यात्
अन० म० सा० भ० क्रियाति० परो० भू० सा० भू०
पूरयिता पूरयिष्यति अपूरयिष्यत् पूरयामास अपूपूरत्
पू० का० क्रि० पूरयित्वा शतृप्रत्य-पूरयत् नि० क्रि० पूरयितुम्

दण्ड (सजा देना)

वर्त० आज्ञा अन० भू० विधि आशिषू
दण्डयति दण्डयतु अदण्डयत् दण्डयेत् दण्ड्यात्
अन० म० सा० भ० क्रियाति० परो० भू० सा० भू०
दण्डयिता दण्डयिष्यति अदण्डयिष्यत् दण्डयामास अददण्डत्
पू० का० क्रि० दण्डयित्वा शतृप्र-दण्डयत् नि० क्रि० दण्डयितुम्

अर्ज (कमाना)

वर्त० आज्ञा अन० भू० विधि आशिषू
अर्जयति अर्जयतु अर्जयत् अर्जयेत् अर्ज्यात्

अन. भ.	सा. भ.	क्रियाति.	परो. भू.	सा.	भू.
अर्जयिता	अर्जयिष्यति	आर्जयिष्यत्	अर्जयामास	अर्जयत्	
पू. का. क्रि.	अर्जयित्वा	} शतृप्र- अर्जयन् नि. क्रि. अर्जयितुम्			
	समर्ज्य				

वर्ण (वर्णन करना)

वर्त.	आज्ञा	अन. भू.	विधि	आशिप्
वर्णयति	वर्णयतु	अवर्णयत्	वर्णयेत्	वर्णयात्
अन. भू.	सा. भू.	क्रियाति	परो. भू. सा. भू.	
वर्णयिता	वर्णयिष्यति	अवर्णयिष्यत्	वर्णयामास	अववर्णत्
पृ. का. क्रि.	वर्णयित्वा	शतृप्र-वर्णयत्	नि. क्रि.	वर्णयितुम्

चूर्ण (चूरना) इस के रूप भी वर्ण के समान होते हैं । सा. भू. अचुचूर्णत् । पीड (सनात्ता) इस के रूप भी ऐसे ही होते हैं सामान्य भूत अपीपिडत् ।

णिजन्त या प्रेरणार्थक ।

जब 'पठ' इत्यादि धातुओं का पढ़ाना इत्यादि अर्थ होजाता है तब वे णिजन्त या प्रेरणार्थक कहलाते हैं । णिजन्त धातुओं के रूप भी पूज, पूर आदि पूर्वोक्त धातुओं के समान ही होते हैं ।

यथा-पठ्	का पाठयति	इत्यादि	सा. भू.	अपीपठत्
पच् का	पाचयति	इत्यादि	सा. भू.	अपीपचत्
पत् का	पातयति	इत्यादि	सा. भू.	अपीपतत्
वच् का	वासयति	इत्यादि	सा. भू.	अपीवसत्
दह् का	दाहयति	इत्यादि	सा. भू.	अदीदहत्
लिख् का	लेखयति	इत्यादि	सा. भू.	अलीलिखत्
दृश् का	दर्शयति	इत्यादि	सा. भू.	अददर्शत्
पा का	पाथयति	इत्यादि	सा. भू.	अपीप्यत्
श्रु का	श्रावयति	इत्यादि	सा. भू.	अशिश्रवत्
स्था का	स्थापयति	इत्यादि	सा. भू.	अतिष्ठिपत्
जागृ का	जागरयति	इत्यादि	सा. भू.	अजजागरत्
शी का	शाययति	इत्यादि	सा. भू.	अशीशयत्
भुज् का	भोजयति	इत्यादि	सा. भू०	अबूभुजत्
कुप् का	कोपयति	इत्यादि	सा. भू०	अचूकुपत्

हिन्दी (में अनुवाद करो)

दैवा विष्णुं पूजयामासुः । मार्गे बहुदूरपर्यन्तं कश्चित्कूपो नास्ति ।
तत्तस्मिन् सरसि गत्वा कमण्डलुं जलेन पूरयित्वा शीघ्रमागच्छ ।

ये परान् पीडयन्ति तान् राजानो दण्डयन्ति । ये युवावस्थायां धनमर्जयन्ति ते वृद्धावस्थायां सुखेन वसन्ति । कालिदासो रघुवंशे

१

रघूणामन्त्रयमवर्णयत् । प्रथममिमं शर्कराखण्डं चूर्णय पश्चात्स-
लिले पातयित्वा मधुरं जलं पित्र । यदाऽहं स्वपाठं श्रावयामि तदा
गुरुरपि मां महता त्नेहेन पाठयति । स राजा यं ग्राममवीवसत् तं
तस्य शत्रुः स्वजनैरदीदहत् । यदि तत्पत्रमहमद्यैवालेखयिष्यं
तर्हि त्वामप्यदर्शयिष्यं श्वस्तु त्वं गन्तासि । एते जनाः पान्थान्
जलं पाययन्ति, अहो ? महतः पुण्यस्य कार्यमेतत् । यद्यहं तव धनं
तव करे स्थापयेयं तर्हि त्वं कथं न मे विश्वासं कुर्याः । ब्राह्मणी
शय्यायां शिशुं शाययित्वा जलकुम्भमादाय नदीमगच्छत् । पूर्वं
बालान् वृद्धान् च भोजयित्वा ततो मामपि भोजय । शकटारञ्चा-

२

णक्यं नन्दायाकोपयत् ।

संस्कृत में अनवाद करो ।

भाषाठकी पूर्णिमा को विद्यार्थी गुरु को पूजते हैं । रास्ते में जो
वृद्ध था उस को मैंने मिट्टी से भरदिया । अगर आप ही उसे

पूजा न दें तो कौनदे ? । धन कमा और उसे अच्छे काम में लगा ।

१) वस (२) जिस के ऊपर नाराज हो या नाराज करे उस से
होती है । (३) युज् का प्रेरणार्थक लाना चाहिये ।

धर्मात्मा राजा के यश को कौन नहीं बखानता । उस ने लड्डूको
 दही में चूरकर खाया । दुष्टलोग बिना कारण भी दूसरों को सता-
 ते हैं । उस ने मुझे संस्कृत पढ़ाई, मैंने उसे अंग्रेजी पढ़ाई । हम
 उस से रोज भात पकवाते हैं । आप ही ने तो मुझे इस ज़मीन
 में बसायाथा और आप ही मेरे घर की दीवारें गिराते है क्या
 यह वाजिब है । मैंने मेरे दोस्त से उस के लिए एक चिट्ठी
 लिखवालीथी उसे देखकर उस ने मुझे अपने घर में टिकालिया ।
 हमने आज आप को जो जो दिखाया उस का हाल इन को भी
 कहो । बेटा तुम अकेले न जाओ वहां तुम्हें कौन खिलाएगा,
 कौन पिलाएगा, कौन वस्त्र पर जगाएगा । उसे नाराज न कर वह
 तुझे पीटेगा ।

सहाँ तक जो धातुओं के रूप लिखे गए हैं वे परस्मैपद के हैं
 अब आगे आत्मनेपद के लिखे जाँयगे ।

लभू (पाना)

वर्तमान ।

प्र. पु.	लभते	लभेते	लभन्ते
म. पु.	लभसे	लभेथे	लभध्वे

(१) वच्च् का प्रेरणार्थक लाना चाहिए ।

(९४)

उ० पु० लभे

लभावहे
आज्ञा ।

लभामहे

प्र० पु० लभताम्

लभेताम्

लभन्ताम्

म० पु० लभस्व

लभेथाम्

लभध्वम्

उ० पु० लभै

लभावहे

लभामहे

अनद्यतन भूत ।

प्र० पु० अलभत

अलभेताम्

अलभन्त

प्र० पु० अलभथाः

अलभेथाम्

अलभध्वम्

उ० पु० अलभै

अलभावहि

अवभामहि

विधि ।।

० पु० लभेत

लभेयाताम्

लभेरन्

० पु० लभेथाः

लभेयाथाम्

लभेध्वम्

० पु० लभेय

लभेवाहि

लभेमाहि

आशिष् ।

० पु० लप्सीष्ट

लप्सीयास्ताम्

लप्सीरन्

० पु० लप्सीष्ठाः

लप्सीयात्थाम्

लप्सीध्वम्

० पु० लप्सीय

लप्सीवाहि

लप्सीमाहि

अनद्यतन भविष्यत् ।

२ पु लब्धा

लब्धारौ

लब्धारः

(१६)

म. पु. लब्धासि
उ. पु. लब्धाहे

लब्धासाम्ने
लब्धास्वहे

लब्धाध्वे
लब्धास्महे

सामान्य भविष्यत् ।

प्र. पु. लप्स्यते
म. पु. लप्स्यसे
उ. पु. लप्स्ये

लप्स्येते
लप्स्येथे
लप्स्यावहे

लप्स्यन्ते
लप्स्यध्वे
लप्स्यामहे

क्रियातिपात्ति ।

प्र. पु. अलप्स्यत
म. पु. अलप्स्यथाः
उ. पु. अलप्स्ये

अलप्स्येताम्
अलप्स्येथाम्
अलप्स्यावहि

अलप्स्यन्त
अलप्स्यध्वम्
अलप्स्यामहि

परोक्ष भूत ।

प्र. पु. लेभे
म. पु. लेभिषे
उ. पु. लेभे

लेभाते
लेभाथे
लेभिवहे

लेभिरे
लेभिध्वे
लेभिमहे

सामान्य भूत ।

प्र. पु० अलब्ध
म. पु० अलब्धाः
उ. पु० अलप्सि

अलप्साताम्
अलप्साथाम्
अलप्स्यहि

अलप्सत
अलब्ध्वम्
अलप्समहि

पू. का. क्रि० लब्ध्वा
उपलभ्य

शानच्प्रत्ययान्त
लभमान

नि० क्रि लब्धुम्

सह (सहना)

वर्त०	आज्ञा	अन०भू०	विधि	आशिष्
सहते	सहताम्	असहत	सहेत	सहिषीष्ट
अन०भ०	सा०भ०	क्रियाति०	परो०भू०	
सहते	सहिष्यते.	असहिष्यत	सेहे	

सामान्य भूत ।

प्र० पु०	असहिष्ट	असहिषाताम्	असहिषतः
म० पु०	असहिष्ठाः	असहिषाथाम्	असहिष्ट्वम्
उ० पु०	असहिषि.	असहिष्वाहि	असहिष्वाहिः

सहित्वा

पू० का० क्रि०	उपसह्य	शानच्प्रत्ययान्त०	नि० क्रि०
		सहमान	सोडुम्

सेव् (सेवाकरना)

वर्त०	आज्ञा	अन०भू०	विधि०	आशिष्
सेवते	सेवताम्	असेवत	सेवेत	सेविषीष्ट

(२) आत्मनेपदी धातुओं से 'जारहा' सह रहा इत्यादि प्रवर्तमान क्रिया (Present continuous) बतलाने के लिए शानच्-प्रत्यय क्रिया है।

(१७)

अन० भ०	सा० भ०	क्रियति०	परो भू०	सा० भू०
सेविता	सेविष्यते	असेविष्यत	सिषेवे	असेविष्ट
पू० का० क्रि०	सेवित्वा संसेव्य	शानच्प्रत्ययान्त सेवमान	नि० क्रि०	सेवितुम्

क्षम् (क्षमा करना)

वर्त०	आज्ञा०	अन० भू०	विधि०	आशिष्
क्षमते	क्षमताम्	अक्षमत०	क्षमेत	क्षमिषीष्ट
अन० भ०	सा० भ०	क्रियाति०	सा० भू०	
क्षमिता	क्षमिष्यते	अक्षमिष्यत	अक्षमिष्ट	
परोक्ष भूत ।				
प्र० पु०	चक्षमे	चक्षमाते	चक्षमिरे	
म० पु०	चक्षमिषे	चक्षमाथे	चक्षमिध्वे	
उ० पु०	चक्षमे	चक्षमिवहे	चक्षमिमहे	
पू० का० क्रि०	क्षमित्वा क्षान्त्वा	शानच्प्रत्ययान्त क्षममाण	नि० क्रि०	क्षमितुम् क्षन्तुम्

वृत् (मौजूद होना)

(१) वृत् धातु के पहले 'प्र' लगाने से 'लगन,' और 'नि' लगाने से 'वृत्ना' या 'हृत्ना' अर्थ होजाता है ।

(१८)

वर्तते	अज्ञा	अन भू०	विधि०	आशिष्
वर्तते	वर्तताम्	अवर्तत	वर्तत	वर्तिषीष्ट
अन० भ०	सा० भ०	क्रियाति	सा० भू०	अवर्तिष्ट
वर्तिता	वर्तिष्यते	अवर्तिष्यत		
प्र० पु०	वृते	परोक्ष भूत ।	वृतिरे	
म० पु०	वृतिषे	वृताते	वृतिष्वे	
उ० पु०	वृते	वृताथे	वृतिमेहे	
		वृतिवहे		
		ज्ञानचपत्ययान्त		
		वर्तमान		

कम्प (काँपना)

वर्त०	आज्ञा	अन भू०	विधि	आशिष्
कम्पते	कम्पताम्	अकम्पत	कम्पेत	कम्पिषीष्ट
अन० भू०	सा० भ०	क्रियाति०	परोक्षभू०	सा० भू०
कम्पिता	कम्पिष्यते	अकम्पिष्यत	चकम्पे	अकम्पिष्ट

(१) वृत्त धातु के अनद्यतन भविष्यत् में 'वर्त्स्यति' इत्यादि परस्मै-पद के रूप भी होते हैं । (२) वृत्त धातु की क्रियातिपत्ति में 'अवर्त्स्यत' परस्मैपद के रूप भी होते हैं । (३) वृत्त धातु के सामान्यभूत रूपों में 'वर्त्स्यते' परस्मैपद के रूप भी होते हैं ।

शानच्प्रत्ययान्त-कम्पमान

लज्ज (शर्माना)

वर्त०	आज्ञा०	अन०भू०	विधि०	आशिष्
लज्जते	लज्जताम्	अलज्जत	लज्जेत	लज्जिषीष्ट
अन०भू०	सा०भू०	क्रियाति०	परो०भू०	सा०भू०
लज्जिता	लज्जिष्यते	अलज्जिष्यत	ललज्जे	अलज्जिष्ट
पू० का० क्रि०-	लज्जित्वा शानच्प्रत्ययान्त			लज्जमान

शिक्ष (सीखना)

वर्त०	आज्ञा०	अन०भू०	विधि०	आशिष्
शिक्षते	शिक्षताम्	अशिक्षत	शिक्षेत	शिक्षिषीष्ट
अन०भू०	सा०भू०	क्रियाति०	परोक्षभू०	सा०भू०
शिक्षिता०	शिक्षिष्यते	अशिक्षिष्यत	शिक्षिषे	अशिक्षिष्ट
पू० का० क्रि०	शिक्षित्वा शानच्प्र०-शिक्षमाण नि० क्रि०			शिक्षितुम्

(१) लज्जार्यक धातुओं के योग में जिस से लज्जा होती हो उस से पश्चमी करनी चाहिए-यथा-श्वशुरात् लज्जत ।

भिक्ष् (भिक्षा मांगना) इस के रूप भी शिक्ष के समान ही होते हैं । परोक्ष भूत में 'विभिक्षे' इत्यादि ।

बाध् (सताना) इस के रूप भी शिक्ष् के समान ही होते हैं परोक्षभूत में 'बबाधे' इत्यादि ।

मन्दिर, ज्ञान

जन् (पैदाहोना)

वर्त०	अज्ञ०	अन०	विधि०	आशिष्
जायते	जायताम्	अजायत	जायेत्	जनिषीष्ट
अन० भ०	भ०	सामा० भ०		क्रियाति
जनिता		जनिष्यते		अजनिष्यत
		परोक्ष भूत ।		
प्र०पु०	जज्ञे	जज्ञाते		जज्ञिरे
म०पु०	जज्ञिषे	जज्ञाथे		जज्ञिध्वे
उ०पु०	जज्ञे	जज्ञिवहे		जज्ञिमहे
		सामान्य भूत ।		
	अजनि	अजनिषाताम्		अजनिषत
प्र०पु०	अजनिष्ट			
म०पु०	अजनिष्ठाः	अजनिषाथाम्		अजनिध्वम्
उ०पु०	अजनिषि	अजनिष्वहि		अजनिष्महि

पू०का० क्रि० जन्तित्वा, शानच्प्रत्ययान्त-जायमान

डी (उड़ना)

वर्त०	आज्ञा०	अन०भू०	विधि	आशिष्
डीयते	डीयताम्	अडीयत	डीयेत	डयिषीष्ट
अनःभ०	सा०भ०	क्रियाति०	साः भू०	
डयिता	डयिष्यते	अडयिष्यत	अडयिष्ट	

परोक्ष भूत ।

प्र०पु०	डिञ्ये	डिञ्याते	डिञ्यिरे
म०पु०	डिञ्यिषे	डिञ्याथे	डिञ्यिध्वे
उ०पु०	डिञ्ये	डिञ्यिवहे	डिञ्यिमहे
पू०का०क्रि०	शानच्प्रत्ययान्त	नि० क्रि०	
डयित्वा	डीयमान	डयितुम्	

हिन्दी में अनुवाद करो ।

लभस्व वत्से ! वरमात्मतुल्यम् । नापराधमहं तस्य सोढुं
शक्नोमि कर्हिचित् ! पद्मं सहित भ्रमरस्य कोमलं शिरीषपुष्पं न

१) डी धातु के पूर्व प्रायः 'उद्' उपसर्ग लगा ही रहता है परन्तु जिन लकारों में 'अ, नहीं लगता उन में उड़ होजाता है यथा 'उड़्डीयते' । जिनमें 'अ' लगता है उन में 'उद्, होजाता है यथा- 'उद्डीयत ।

पुनः पतत्रिणः । सेवध्वं पितरौ वालाः ! । आज्ञाभङ्गकरान्
 न क्षमेत मृतानपि । वर्तते न धनं-येषां न तेषां भुवि सत्क्रिया
 चकम्पे सहस्रा सीता दृष्ट्वा तां दुष्टराक्षसीम् । लज्जते रमणी पत्युः ।
 शिक्षध्वं सकलाः कलाः । भिक्षे परोपकाराय न भिक्षे स्वार्थहेतवे ।
 दुष्टो धनमनामाद्यं धनिनं बहु बाधते । जायन्ते पण्डिताः पुत्रा नूनं
 भाग्यवतो गृहे ॥ यदि त्वं शनैर्न गमिष्यसि तर्हि सख्यग उड्डयिष्यते ॥

संस्कृत में अनुवाद करो ।

जब वह मुसलमान बादशाह किले में घुसा तब उस ने वहाँ
 एक भी औरत को न पाया । कृष्ण ने शिशुपाल के सौ अपराध
 सहे । उन्होंने ने ब्राह्मणों को सेया और उन की आशिष से पुत्र
 और धन पाया । गोपाल का यह पहला ही अपराध था इसलिए
 उस की माता ने उसे क्षमा किया । अरे तू कांपता क्यों है क्या
 किसीने तुझे मारा ? । जिस से यह शर्माता है उसे मैं जानता हूँ ।

जब धन था तब तो फिजूलखर्ची की अब दरवाने पर भीख
 मांगता है । मैं हिसाब सीखूंगा मुझे न सता । मङ्गलवार को उसके
 लड़का हुआ था इसलिए औरतें मङ्गल के गीत गाती हैं । मोर
 बहुत दूर नहीं उडता है ।

(१) सत्कार । (२) अपव्यय-रूप बालक के समान ।

(१०३)

हिन्दी में अनुवाद करो ।

अस्मिन् समये भारतवर्षे बहवो विद्यार्थिन आङ्ग्लभाषां पठन्ति । यद्यपि सा राजभाषाऽस्ति तस्याः पठनेन व्यवहारे सौकर्यं भवति वृत्तेश्च लाभः सुगमतया जायते अतो जनास्तामवश्यमेव पठेयुः तथापि भारतर्षस्य प्रचीनां संस्कृतभाषामपि ते अवश्यमेव पठेयुः यत एतस्याः पठनेन प्रथमं तु संस्कृतभाषायास्तस्याः साहित्यस्य च रक्षा स्यात् स एवास्माकं महात् लाभः । द्वितीयं च संस्कृतभाषायां बहवः सदुपदेशाः सन्ति । तेषां ज्ञानेन छात्राणामाचारः श्रेष्ठः स्यात् तृतीयमस्माकं सर्वे धर्मग्रन्थाः संस्कृतभाषायां लिखिताः सन्ति संस्कृतभाषाया ज्ञानेन वयं तान् सुगमतया पठितुं शक्यामः । तेषां पठनेन चास्माकं धर्मस्य ज्ञानं अविष्यति । धर्मज्ञानेन च वयं धर्मकार्येषु प्रवर्तिष्यामहे । वृद्धावस्थायां तु संस्कृतभाषायाः पठनेन महानेव लाभो भवति । यतस्तस्यामवस्थायां प्राये जना धर्मकार्याणि कुर्वन्ति । धर्मकार्याणि च यद्यपि दानं, दया, भक्तिरित्यादीनि बहूनि सन्ति तथापि रामायणस्य, भागवतस्य, पुराणानां च पारायणेन, मनोविनोदेन सहैव धर्मप्राप्तिर्भवति । तेषां पारायणं च संस्कृत-

भाषाया ज्ञाता जन एव कर्तुं शक्नोति । अतो वृद्धावस्थां सुखमयीं
पुण्यमयीं च कर्तुं वयं संस्कृतभाषामवश्यमेव पठेम ।

संस्कृत में अनुवाद करो ।

देहली का बादशाह एकवार जंगल से एक शेर ले आया !
और उस की सभा में जो क्षत्रिय थे उन को कहा—“ अगर कोई
ताकतवर हो तो शेर से लड़े” । खंडेला के राजा द्वारिकादासने
इस बात को मंजूर किया । वह न्हाकर एक थाली में पूजा का
सामान लेकर शेर के सामने गया । उस के ललाट पर तिलक
कर गले में फूलों की माला पहिना पास में आसन पर बैठकर
पूजाकरने लगा । शेर उस के पास आकर उसे अपनी जीभ से

- (१) जाननेवाला । (२) बलिन्-रूप गुणिन् के समान ।
(३) युध् (लड़ना) रूप-युध्यते, युध्यताम्, अयुध्यत, युध्येत,
योद्धा, योत्स्यते, अयोत्स्यत, युयुधे । सा. भू. में अयुद्ध, अयुत्साताम् अ-
युत्सत । अयुद्धाः अयुत्साथाम् अयुद्धम् अयुत्सि अयुत्स्वाहि अयुत्स्माहि ।
(४) पिठर रूप पुस्तक के समान । (५) परिधाप्य । (६) उपविश्य
रन्व ।

वाटने लगा । दारिकादास ज़रा भी नहीं डरा और वैसे ही बैठा रहा । उस को वैसे बैठा देखकर सब लोग सुताञ्जुव होगए । बादशाहने दारिकादास को बुलाया और कहा , जो चाहो सो मांगो' । दारिकादास ने कहा मैंने आज भाग्यवश से ही इस विपत्ति से उद्धार पाया है । इसलिए मैं यह ही मांगताहूँ कि "आयन्दा कभी किसी को ऐसी आफतमें मत डालना" । दारिकादास यदि चाहते तो उस वक्त बादशाह से बहुत से गाँव माँगलेंते परन्तु उन्होंने ने ऐसा न किया वलिक लोगों का भला चाहा । उन का यह काम तारीफ के लायक था ।

धातु (क्रिया)

वृध (बढ़ना)

(१) लेहुमारब्ध । (२) किञ्चिदपि । (३) भी—(डरना) वर्त—विभेति, विभीतः, विभ्यति । विभेषि, विभीथः, विभीथ । विभेमि, विभीवः, विभीमः । आज्ञा—विभेतु, विभीताम्, विभ्यतु । विभीहि, विभीतम्, विभीत । विभयानि, विभयाव, विभयास, । अन. भू. अविभेत्, अविभीताम्, अविभ्युः । अविभेः, अविभीतम्, अविभीत, । अविभयम्, अविभीव, अविभीम । विधि—विभीयात्, विभीयाताम्, इत्यादि । शेषरूप नीके समान होते हैं शतृप्रत्ययान्त—विभ्यत् (४) विस्मित विशेषण । (५) भविष्यति । (६) प्रत्युत्—अव्यय ।

(१०६)

वर्ते०	आज्ञा	अन० भू०	विधि०	आशिष्
वर्धते	वर्धताम्	अवर्धत	वर्धेत	वर्धिषीष्ट
अन० भ०	सा० भ०	क्रियाति०	परो० भू०	सा० भू०
वर्धिता	वर्धिष्यते	अवर्धिष्यत	ववृधे	अवर्धिष्यत
पू०का०क्रि०	वर्धित्वा	शानच्प्र-वर्धमानः	नि० क्रि०	वर्धितुम्

प्रारम्भ (शुरू करना)

वर्ते०	आज्ञा	अन० भू०	विधि०	आशिष्
प्रारभते	प्रारभताम्	प्रारभत	प्रारभेत	प्रारप्सौष्ट
अन० भ०	सा० भ०	क्रियाति०	परो० भू०	
प्रारब्धा	प्रारप्स्यते	प्रारप्स्यत	प्रारेभे, प्रारेभाते	इत्यादि

सामान्य भूत ।

अ० पु०	प्रारब्ध	प्रारप्साताम्	प्रारप्सत
म० पु०	प्रारब्धाः	प्रारप्साथाम्	प्रारब्ध्वम्
उ० पु०	प्रारप्सि	प्रारप्सद्भि	प्रारप्सद्भि
पू० का०क्रि०	प्रारभ्य,	शानच्प्रत्य-प्रारभमाणः	नि०क्रि०प्रारब्धुम्

(१) वृष धातु के सामान्यभविष्यत् में 'वत्स्यति' इत्यादि और क्रियातिपत्ति में 'अवत्स्यत्' इत्यादि परस्मैपद के रूप भी होते हैं ।

मन् (मानना, स्वीकार करना)

वर्त.	आज्ञा.	अन.भू.	विधि.	आशिषः
मन्यते	मन्यताम्	अमन्यत	मन्येत	मंसीष्ट
अन. भू.	सा. भ.	क्रियाति.		परो. भू.
मन्ता	मंस्यते	अमंस्यत		मेने
		सामान्य भूत ।		
प्र पु.	अमंस्त	अमंसाताम्		अमंसत
म. पु.	अमंस्थाः	अमंसाथाम्		अमन्ध्वम्
उ. पु.	अमांसि	अमंस्वाहि		अमंस्महि ।
पू. का. क्रि.	मत्वा	शानच्प्रत्य-मन्यमानः		नि. क्रि. मन्तुम्

मृ (मरना)

वर्त.	आज्ञा.	अन.भू.	विधि.	आशिषः
म्रियते	म्रियताम्	अम्रियत	म्रियेत	मृषीष्ट
अन.भ., सामा. भ.,	क्रियाति.	तथा परोक्षभूत में मृ धातु		के रूप
परस्मैपद में होते हैं यथा—				
अन. भू.	सा. भ.		क्रियाति.	
मर्ता	मरिष्यति		अमरिष्यत्	

(१०८)

परोक्ष भूत ।

प्र०पु० ममार

म०पु० ममर्थ

उ०पु० ममार
ममर }
ममर }

मम्रतुः

मम्रथुः

मम्रिव

मम्रुः

मम्र

मम्रिम

सामान्य भूत ।

प्र०पु० अमृत

म०पु० अमृथाः

उ०पु० अमृषि

पू०का० क्रि० मृत्वा

अमृषपाताम्

अमृषाथाम्

अमृष्वहि

ज्ञानचप्रत्य-म्रियमाण, नि०क्रि०मर्तुम्

अमृषत

अमृष्वम्

अमृष्महि

बुध् (समझाना)

वर्त० आज्ञा०

बुध्यते बुध्यताम्

अन०भ० सा०भ०

बोद्धा भोत्स्यते

अन०भू०

अबुध्यत

क्रियाति०

अभोत्स्यत

विधि०

बुध्येत

परो०भू०

बुबुधे

आशिष्

भुत्सीष्ट

सामान्य भूत ।

प्र०पु० अवोधि }
अबुद्ध }

अभुत्साताम्

अभुत्सत

म०पु०	अबुद्धाः	अभुत्साथाम्	अबुद्ध्वम्
उ०पु०	अभुत्सि	अभुत्स्वहि	अभुत्स्महि
पू०का०क्रि	बुद्ध्वा प्रबुध्य	शानच्प्रत्य-बुध्यमानः नि०क्रि०बोद्धुम्	

शी (सोना)

वर्तमान ।

प्र०पु०	शेते	शयाते	शेरते
म०पु०	शेषे	शयाथे	शेध्वे
उ०पु०	शये	शेवहे	शेमहे

आज्ञा

प्र०पु०	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्
म०पु०	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
उ०पु०	शयै	शयावहे	शयामहे

अनद्यतन भूत ।

प्र०पु०	अशेत	अशयाताम्	अशेरत
म०पु०	अशेथाः	अशयाथाम्	अशेध्वम्
उ०पु०	अशयि	अशेवहि	अशेमहि

(१) शी धातु के रूपों से पहले 'सम्' जोड़ देने से 'संदेहकरना' और 'अति' जोड़ देने से बढ़जाना (To surpass) अर्थ होजाता है

(११०)

विधि ।

प्र०पु०	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
म०पु०	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
उ०पु०	शयीय	शयीवहि	शयीमहि
आशिष्	अन०भ०	सा० भ० क्रियाति०	परोक्षभू०
शायिषीष्ट	शयिता	शयिष्यते अशयिष्यत	शिष्ये

सामान्य भूत ।

प्र०पु०	अशयिष्ट	अशयिषाताम्	अशयिषत
म०पु०	अशयिष्ठाः	अशयिषाथाम्	अशयिध्वम्
उ०पु०	अशयिषि	अशयिष्वहि	अशयिष्महि
पृ० का० क्रि०	शयित्वा	शानच्प्रत्य-शयानः	नि० क्रि शयितुम्

विक्री (बेचना)

वर्तमान ।

प्र०पु०	विक्रीणीते	विक्रीणाते	विक्रीणते
म०पु०	विक्रीणीषे	विक्रीणाथे	विक्रीणीध्वे
उ०पु०	विक्रीणे	विक्रीणीवहे	विक्रीणीमहे
		आज्ञा ।	
प्र०पु०	विक्रीणीताम्	विक्रीणाताम्	विक्रीणताम्

(१११)

१. पु.	विक्रीणीष्व	विक्रीणीथाम्	विक्रीणीध्वम्
३. पु.	विक्रीणै	विक्रीणावहै	विक्रीणामहै

अनद्यतन भूत ।

प्र. पु.	व्यक्रीणीति	व्यक्रीणीताम्	व्यक्रीणत
म. पु.	व्यक्रीणीथाः	व्यक्रीणीथाम्	व्यक्रीणीध्वम्
उ. पु.	व्यक्रीणि	व्यक्रीणीवहि	व्यक्रीणीमहि

द्विधि ।

प्र. पु.	विक्रीणीत	विक्रीणीयाताम्	विक्रीणीरन्
प्र. पु.	विक्रीणीथाः	विक्रीणीयाथाम्	विक्रीणीध्वम्
उ. पु.	विक्रीणीय	विक्रीणीवहि	विक्रीणीमहि
अन. भ.	सा. भ.	क्रियाति.	
विक्रेता	विक्रेष्यते	व्यक्रेष्यत	

परोक्ष भूत ।

प्र. पु.	विचिक्रिये	विचिक्रियाते	विचिक्रियिरे
म. पु.	विचिक्रियिषे	विचिक्रियाथे	विचिक्रियिध्वे
उ. पु.	विचिक्रिये	विचिक्रियिवहे	विचिक्रियिमहे

सामान्य भूत ।

प्र. पु.	व्यक्रेष्ट	व्यक्रेषाताम्	व्यक्रेषत
म. पु.	व्यक्रेष्ठाः	व्यक्रेषाथाम्	व्यक्रेषध्वम्

उ. पु. व्यक्रेषि व्यक्रेष्वहि
 पु०का०क्रि०विक्रीय शानच्प्रत्य-विक्रीणानः नि०क्रि०

आदा (लेना)

वर्तमान ।

प्र० पु०	आदत्ते	आददाते	आददत्ते
म० पु०	आदत्से	आददाथे	आदद्ध्वे
उ० पु०	आददे	आदद्रहे	आदद्महे

आज्ञा ।

प्र० पु०	आदत्ताम्	आददाताम्	आददताम्
म० पु०	आदत्स्व	आददाथाम्	आदद्ध्वम्
उ० पु०	आददै	आददावहै	आददामहै

अनद्यतन भूत ।

प्र० पु०	आदत्त	आददाताम्	आददत्
म० पु०	आदत्थाः	आददाथाम्	अदद्ध्वम्
उ० पु०	आददि	आदद्रहि	आदद्महि

विधि ।

प्र० पु०	आददीत	आददीयाताम्	आददीरन्
म० पु०	आददीथाः	आददीयाथाम्	आददीध्वम्
उ० पु०	आददीय	आददीवहि	आददीमहि

आशिष	अन. भ.	सा. भ.	क्रियाति.	परो. भू.
आदासीष्ट	आदाता	आदास्यते	आदास्यत	आददे
		सामान्य भूत ।		

प्र०पु०	आदित	आदिषाताम्	आदिषत
म०पु०	आदिथाः	आदिषाथाम्	आदिष्वम्
उ०पु०	आदिषि	आदिष्वहि	आदिष्वहि

पू० का ०क्रि-आदाय शानच्प्रत्य -आददानःनि०क्रि० आदातुम्

हिन्दी में अनुवाद करो ।

वर्धन्तां संपदो राज्ञः प्रारभन्तां च सात्क्रियाः ।
 मन्यन्तां च प्रजा आज्ञां प्रियन्तां रिपवोऽखिलाः ॥
 बुद्धे भावमहं तस्य शेषे शेषे यतो हरे ? ।
 विषं यद् वर्तते शेषे जायताममृतं हि तद् ॥
 संशयीत न शास्त्रेषु विक्रिणीत न गौरसम् ।
 आददीत धनं धर्माद् एष धर्मः सनातनः ॥
 शिक्षते नहि शास्त्राणि लज्जते न कुकर्मणः ।
 बाधते च सदा जन्तून् यः स दुष्टो न संशयः ॥
 प्रयतन्ते^१ हितं कर्तुं वन्दन्ते^२ च सदा गुरुन् ।

(१) यत् धातु का अर्थ कोशिशकरना है । इस के रूप सेव् धातु के समान होते हैं परोक्षभूत में 'येते' इत्यादि । (२) वन्द् धातु का अर्थ 'नमस्कार करना' है । इसके रूप सेव् के समान होते हैं परोक्षभूत में 'ववन्दे' इत्यादि ।

१
रमन्ते च सतां संगे ये ते सन्तो न संशयः ॥

संस्कृत में अनुवाद करो ।

तुम्हारे कपड़े मैले हैं उन्हें धोओ । वह मुर्गों को लड़ाता है ।

सेनापति ने सिपाहियों की हिम्मत बढ़ाई । उस स्त्री ने, जिस दिन

लड़का जना उसी दिन मर गई । क्या तू ऐसा बुरा काम करके

अपने खानदानवालों को लजावेगा । ज्यों ज्यों रोशनी बढ़ती है

त्यों २ अंधेरा हटता है । जब जब मैं बच्चे को सुलाती हूँ

तब ही ये लड़के शोर मचाकर उसे जगाते और रुलाते हैं ।

(१) रम धातु का अर्थ 'रमणकरना' है इस के वर्तमानादिचार
लकारों में क्षम के समान और शेष लकारों में मन् के समान रूप होते हैं ।

(२) क्षल (धोना) इसके रूप चुर् के समान होते हैं सा. भू. में

'अचक्षलत्' । (३) युध् का प्रेरणार्थक 'योधयाति' इत्यादि सा. भू. में

'अयूयुधत्' । (४) वृध् का प्रेरणार्थक 'वर्धयाति' इत्यादि सा. भू. में

'अववर्धत्' । (५) जन् का प्रेरणार्थक 'जनयाति' इत्यादि सा. भू. में

र्थ 'ल' 'सा. में 'अलल

संस्कृत में अनुवाद करो ।

श्रीमान् अध्यापक महाशय ?

सविनय प्रार्थना है कि ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी को मेरे मित्र हरि-
नारायण का विवाह है और उस की बरात में जाना मुझको
आवश्यक है, इसलिए कृपाकर चार दिन की छुट्टी मंजूरफरमावें ।
आपका अज्ञाकारी सेवक
प्यारी बेटी ?
रेवतीरमणशर्मा ।

तेरी चिट्ठी आई ! तैं ने राधा की सगाई के लिए लिखा सो
ठीक है । सगाई तो हो हीगी । परन्तु यह भी जानती है कि
आजकल सुसराल में उसी लडकी का आदर होता है जो घर के

(१) संस्कृत में बड़े लोगों के लिए एक होने परभी बहुवचन लाया
फरते हैं इसलिए ऐसे वाक्यों का 'श्रीमन्तः पाठकमहाशया' : इत्यादि
हुवचनान्त अनुवाद करना चाहिए ।

(२) संस्कृत में कियाविशेषण से सदा द्वितीया विभक्ति आती है
इसलिए इसका अनुवाद सविनयम् करना चाहिए । (३) वरयात्रा !

(४) धातु यदि अकर्मक होंतो जिस के साथ 'को' हो उस से षष्ठी
करनी चाहिए । (५) अवकाश-रूप बालक के समान । (६) कृधातु
के पहले 'स्वी' लगादेने से 'मंजूरफरमाना' अर्थ होजाता है ।

(७) वरंवृति रूप मति के समान ।